16702

त्रिपाठी ग्रन्थमाला का तृतीय पुष्प

दुमापति दिग्विजय ::

प्रकाशक —

श्री पं० चन्द्रेश्वरपति जी त्रिपाठी

श्री अयोध्या जी

❀ श्रीउमापति त्रिपाठी ग्रन्थमाला ❀

श्रीमदुमापतिदिग्विजय

भूमिका लेखक—

श्रीरामलालजी

सहायक सम्पादक 'कल्याण'

प्रकाशक—

पं० श्रीचन्द्रेश्वरपतिजी त्रिपाठी

स्थान—पं० श्रीउमापति त्रिपाठी जी महाराज

श्री अयोध्या जी

प्रकाशक:—
पं० श्रीचन्द्रेश्वरपतिजी त्रिपाठी
नयाघाट, श्रीअयोध्याजी
(उत्तर--प्रदेश)

प्रथम संस्करण १००६

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य दो रुपये

मुद्रक—
श्रीहनुमत् प्रेस,
श्री अयोध्या जी

परम पूज्यः—

स्वर्गीय पं० रामेश्वरपति जी त्रिपाठी

की

पुण्य स्मृति में

प्रकाशित

※ दो शब्द ※

भारतवर्ष की अध्यात्म सम्पत्ति सनातन और अनादि है। वैदिक मन्त्रद्रष्टा ऋषियों, औपनिषद् मानवों दर्शन के मर्मज्ञों और धर्मशास्त्रज्ञों ने इसकी श्रीवृद्धि में समय-समय पर योग देकर इसकी अक्षुण्णता की रक्षा की है और विशिष्ट बात यह है कि इस परम्परा के पुण्यानुशीलन में सन्त-महात्माओं और विद्वानों ने भी अपने जीवन को तो सार्थक बनाया ही है, साथ ही साथ अपने समकालीन मानवमात्र की आत्मचेतना भी जागरित की है। 'उमापति दिग्विजय' भव्य भारतीय साहित्यगत अध्यात्म परम्परा की चिरन्तन समृद्धि का अक्षर प्रतीक है जिसमें निर्गुण, परमानन्दमय, बोधस्वरूप गुरुतत्व की साकार महिमा अभिव्यञ्जित है। इस ग्रन्थदान में परम भागवत, अभिन्न वशिष्ठ श्रीउमापति के गुरुचरित्र, गुरुस्वरूप, गुरुजीवन की दिव्य झांकी प्रस्तुत की गयी है। 'उमापति दिग्विजय' में रामभक्ति रसिक महामना उमापति जी का अविकल चरित्र अमित श्रद्धामयी भाषा में वर्णित है। इस ग्रन्थ की सबसे बड़ी मौलिकता यह है कि इसका प्रणयन हिन्दी भाषा में सम्पन्न हो सका है। संस्कृत में दिग्विजय काव्य की परम्परा अविच्छिन्न सी है और आदि शंकराचार्य के ही सम्बन्ध में अनेक दिग्विजय काव्य उपलब्ध हैं, पर हिन्दी में इस तरह के काव्य नहीं मिलते हैं। इस बात को ध्यान में रखकर कहा

जा सकता है कि 'उमापति दिग्विजय' के रचयिता ने हिन्दी में दिग्विजय काव्य के प्रणयन की मौलिकता संरक्षित की।

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जनपद के अन्तर्गत पुण्य सलिला गोमती के मनोरम तट पर स्थित धनावली ग्राम के महेशदत्त शुक्ल ने सम्वत् १९३३ वि० में इस ग्रन्थ का उर्दू से हिन्दी में मौलिक ढंग से रूपान्तर किया, वे उमापतिजी के अनन्य चरण-चिन्तक थे इसलिए प्रत्येक पंक्ति में भक्तिमय समर्पण का ही दर्शन होता है। यह काव्य अवधी बोली में लिखा गया है तथा इसमें भावपक्ष की ही विशेष प्रबलता है, यद्यपि कवि की शैली साधारण ही है। तथापि ऋषिकल्प उमापति जी की चरित्र गाथा से सम्पन्न होने के नाते इसमें रस, अलंकार तथा काव्य गत अनेक गुण अपने आप अभिव्यक्त दीख पड़ते हैं। वर्णन शैली संस्कृत दिग्विजय काव्य-परम्परा के ही अनुरूप है।

यदि विक्रमीय उन्नीसवीं शताब्दी का बंगाल रामकृष्ण परम-हंस की सन्त-परम्परा के लिए गौरवान्वित कहा जा सकता है, गुजरात स्वामी दयानन्द सरस्वती की उपस्थिति से समृद्ध माना जा सकता है, तो इस कथन में तनिक भी अति-शयोक्ति नहीं है कि गंगा, यमुना, सरयू और गोमती की शीतल जलधारा से बिचुम्बित उत्तर प्रदेश उमापति को पाकर धन्य हो गया। अध्यात्म के राज्य में उमापतिजी अभिनव वशिष्ठ थे, आचार्य कोटि में वे शंकराचार्य के अभिनव संस्करण थे और साहित्य-साम्राज्य में वे निस्सन्देह दूसरे पण्डितराज

जगन्नाथ थे। यह कल्पना नहीं वास्तविकता है। उनके सुधा मन्दाकिनी, रम्यपदावली अयोध्या विंशतिका, सरयू अष्टक सरव्य-सरोजभास्कर आदि सरस काव्य ग्रन्थ, इस स्वीकृति के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, इन भक्ति पूर्ण काव्यों में उनके साहित्य-कार रूपका विलक्षण दर्शन होता है।

उमापतिजी ने 'कोविद' उपनाम से इन काव्य-ग्रन्थों की रचना की है। इन ग्रन्थों के अध्ययन से उनकी गंभीर चिंतन शैली और परिष्कृत भावभाषा का पता चलता है। सुधामन्दा-किनी पढ़ने पर मुझे ऐसा लगा कि मैं महाकवि माघ की ही रचना का रसास्वादन कर रहा हूं।

श्रीउमापति ने अपने समकालीन जगत की भक्ति चेतना ही नहीं, साहित्य-चेतना भी प्रदान की। उन्होंने भारत खण्ड के प्रधान प्रदेश नेपाल, नदिया, ग्वालियर, ब्रह्मावर्त आदि की यात्रा की, भागवत धर्म की विजयिनी पुण्यपताका फहरा कर श्रुति-स्मृति प्रतिपादित सनातन धर्म का पुण्य संरक्षण किया। यह उनका असाधारण कार्य था, बड़े बड़े विद्वान उनकी बुद्धि और विद्या के चरणदेश में विनत हो गये बड़े-बड़े लक्ष्मीपति राजा-महाराजाओं ने उनकी चरण धूलि-मन्दाकिनी से अपना अभिषेक कर अध्यात्म का जयघोष किया। रीवां ऐसे विशाल राज्य के अधिपति महाराजा विश्वनाथ सिंह ने उनके दर्शन को अपना परम सौभाग्य समझा। शिवाजी के प्रधानामात्य की राजसत्ता के ऐश्वर्य प्रतीक पेशवा बाजीराव ने ब्रह्मावर्त में

उनकी उपस्थिति को बड़ा महत्व दिया। लखनऊ के नवाब इतिहास प्रसिद्ध वाजिदअली शाह ने उनके चरण में अमित श्रद्धा दिखायी। लखनऊ की राजसत्ता ने उनके आशीष की याचना की। अयोध्या-नरेश दर्शनसिंह और उनके वंशज स्व-नामधन्य परम रसिक कवि और महानसेनानायक महाराजा मानसिंह द्विजदेव ने अवध क्षेत्र में उमापतिजी का आतिथ्य-सत्कार ही नहीं किया, उनके स्थाई निवास के समुचित प्रबन्ध में महान् योग भी दिया। अवध प्रान्त तथा उत्तर भारत के अनेक नरेशों और प्रतिष्ठित लोगों ने उमापतिजी महाराज के चरण में शिष्यत्वभाव चरितार्थ किया।

उमापतिजी महाराज ने गोरखपुर मण्डल के प्रसिद्ध मझौली राज्य के अन्तर्गत पुण्य सलिला सरयू के तटपर पिण्डी ग्राम के एक सुपात्र ब्राह्मण कुल को अपने जन्म से धन्य किया था। भगवत्कृपा से वे पृथ्वी पर अस्सी साल तक विराजमान थे। उनके उपास्य गुरुसदन विहारी राम थे जिनको वे अपने शिष्य के रूप में देखते थे, उमापतिजी अपने आपको वशिष्ठ मानते थे, उनके अद्भुत वात्सल्यभाव से समस्त अवध क्षेत्र आश्चर्य-चकित हो उठा। वे उच्च कोटि के रसिक थे, इस नाते उनकी निष्ठा राम में शरण्यभाव की भी थी। दशरथ नन्दन को वे राजा रूप में भी उपास्य समझते थे। स्मार्त वैष्णव तथा शास्त्रज्ञ ब्राह्मण होने के नाते उनकी राजसभा का सदस्य माने जाने में भी उमापतिजी अपना गौरव स्वीकार करते थे।

'उमापति दिग्विजय' आपका प्रकाशन हिन्दी साहित्य में दिग्विजय काव्य' परम्परा का महत्व स्थापित करता है, यह ग्रन्थ ऐतिहासिक और आध्यात्मिक मनोवृत्ति का परिचायक है विक्रमीय उन्नीसवीं शताब्दी की चेतना की। मैं इस प्रकाशन का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। इस मौलिक प्रकाशन के लिये मैं उमापतिजी के वंशज पं० चन्द्रेश्वरपतिजी महाराज तथा अम्बिकेश्वरपति जी त्रिपाठी को धन्यवाद देता हूं।

मेरी कनक भवन पति राघवेन्द्र से यही अत्यन्त विनम्र प्रार्थना है कि श्री अवध क्षेत्र उमापतिजी ऐसे परम भागवत सन्त-महात्माओं की उपस्थिति से सदा सम्पन्न रहे।

गीता उपवन
गोरखपुर
रंग पंचमी २०१५ वि०

रामलाल
सहायक सम्पादक
'कल्याण'

❋ प्रकाशकीय ❋

भगवान श्रीराम की वात्सल्य भाव निष्ठा से श्रीराघवेन्द्र को अपना शिष्य मानकर उपासना करने वाले महापण्डितराज श्रीउमापतिजी त्रिपाठी अभिनव वशिष्ठ का यह जीवन-चरित्र प्रकाशित किया जा रहा है। उनकी रचनायें भी क्रमशः प्रकाशित करने की चेष्टा की जा रही है। जिसमें कुछ वर्ष पहले 'सरयू अष्टक' छप चुका है 'अयोध्या विंशतिका', 'सुधामंदाकिनीस्तव, 'सख्य सरोज भास्कर' प्रकाशित किये जारहे हैं। उनके इस जीवन चरित्र को पढ़कर यदि पाठकगण कुछ भी सफलता प्राप्त कर सकें तो मैं अपने परिश्रम का सफल समझूंगा। समस्त पाठक-पठिकाओं से आशा है कि वे स्वयं इस जीवन चरित्र से लाभ उठावें और दूसरों को भी प्रेरणा देकर लाभ उठाने के लिये उत्साहित करें। इस पुस्तक के प्रकाशित होते समय पं० नारायणदत्त जी शास्त्री ने अपना अमूल्य समय देकर प्रूफ संशोधन आदि कार्यों में जो सहयोग दिया है उसके लिये उन्हें धन्यवाद के साथ ही हम उनके हृदय से कृतज्ञ हैं। हमारे अनन्य सहयोगी श्रीअम्बिकेश्वरपति त्रिपाठी ने जो सहयोग तिरंगा एव सादा एक रंगा ब्लाक, चित्र तथा प्रकाशन कार्य में दिया है इन्हें धन्यबाद क्या दें ये तो हमारे सहोदर ज्येष्ठ भ्रातृज ही हैं। सुप्रसिद्ध मासिक पत्र 'कल्याण' के सम्पादकीय विभाग के श्रीरामलालजी बी० ए० ने इस जीवन वृत्त

की भूमिका लिखकर हमारा जो उत्साह बढ़ाया है उसके लिये हम उन्हें धन्यवाद क्या दें हां उनसे हम बराबर यही आशा करते रहेंगे कि वे ऐसे कार्यों में हमें सहयोग देते रहें यह हमारा उनसे विनम्र आग्रह है। इसके प्रकाशन में और मुद्रण में प्रमाद एवं आलस्यवश जो भूलें रह गई है उसे सूचना मिलने पर द्वितीय संस्करण में सुधारा जा सकता है। पण्डितराज की सम्पूर्ण रचनाएं प्राप्त नहीं हो सकीं, यदि किसी महानुभाव के पास उनकी रचनाएं हों तो वे अमूल्य या समूल्य प्रकाशनार्थ देने की कृपा करें।

महाशिवरात्रि

संवत् २०१५

प्रकाशकः—
चन्द्रेश्वरपति त्रिपाठी, उपनाम
महंत पति त्रिपाठी
स्थानापन्न—
पं० श्रीरामेश्वरपति त्रिपाठी
श्री अयोध्या जी

शुभसम्मति

पुस्तकः – रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय पृ० सं० ३४७ से ३४८

लेखकः डा० भगवतीप्रसादसिंह एम० ए० पी० एच० डी०
अध्यक्ष - हिन्दीविभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय

पं० उमापति त्रिपाठी 'कोविद' की परम्परा (नयाघाट-अयोध्या)

पं० उमापति जी वात्सल्य निष्ठा (गुरु भाव) के रामभक्त थे। इस भाव के वे अकेले ऐसे महात्मा थे जिनकी परम्परा अब तक चली आरही है। अयोध्या में स्मार्त--वैष्णवों

का यह एक मुख्य आचार्यपीठ है। पं० उमापतिजी के कोई पुत्र न था अतएव उनके पश्चात् उनके भाई पं०विद्यापतिजी त्रिपाठी के वंशजों का ही उस गद्दी पर स्वत्व स्थापित हुआ। कालान्तर में यह गद्दी चार पृथक पट्टियों में विभाजित हो गई। नीचे उनमे से प्रत्येक की परम्परा दी जाती है।

क—(१) श्री पं० उमापति त्रिपाठी (२) श्री पं० शिवरतनपति त्रिपाठी, (३) श्री पं० निरीक्षणपति त्रिपाठी, (४) श्री पं० रामेश्वरपति त्रिपाठी, (५) श्री पं० चन्द्रेश्वरपति त्रिपाठी (वर्तमान)

ख श्री पं० निरीक्षणपति त्रिपाठी के देहावसान के अनन्तर उनके द्वितीय पुत्र श्रीशिवेक्षणपति त्रिपाठी ने एक अलग गद्दी स्थापित कर ली। अब उसके अधिकारी उनके पुत्र श्री पं० शिवानन्दपति त्रिपाठी हैं।

ग—(१) श्री पं० उमापति त्रिपाठ', (२) श्री पं० रंगराजपति त्रिपाठी, (३) श्री पं० बब्बनपति त्रिपाठी, (४) श्री पं० राजारामपति त्रिपाठी, (५) श्री पं० शीतलपति त्रिपाठी, (६) श्री पं० वन्धुपति त्रिपाठा, (७) श्री पं० सत्यदेवपति त्रिपाठी (वर्तमान)

श्री पं० राजारामपति त्रिपाठी की एक नई गद्दी स्थापित हुई जिस पर अब (घ) श्रीअम्बिकेश्वरपति त्रिपाठी आसीनहैं,

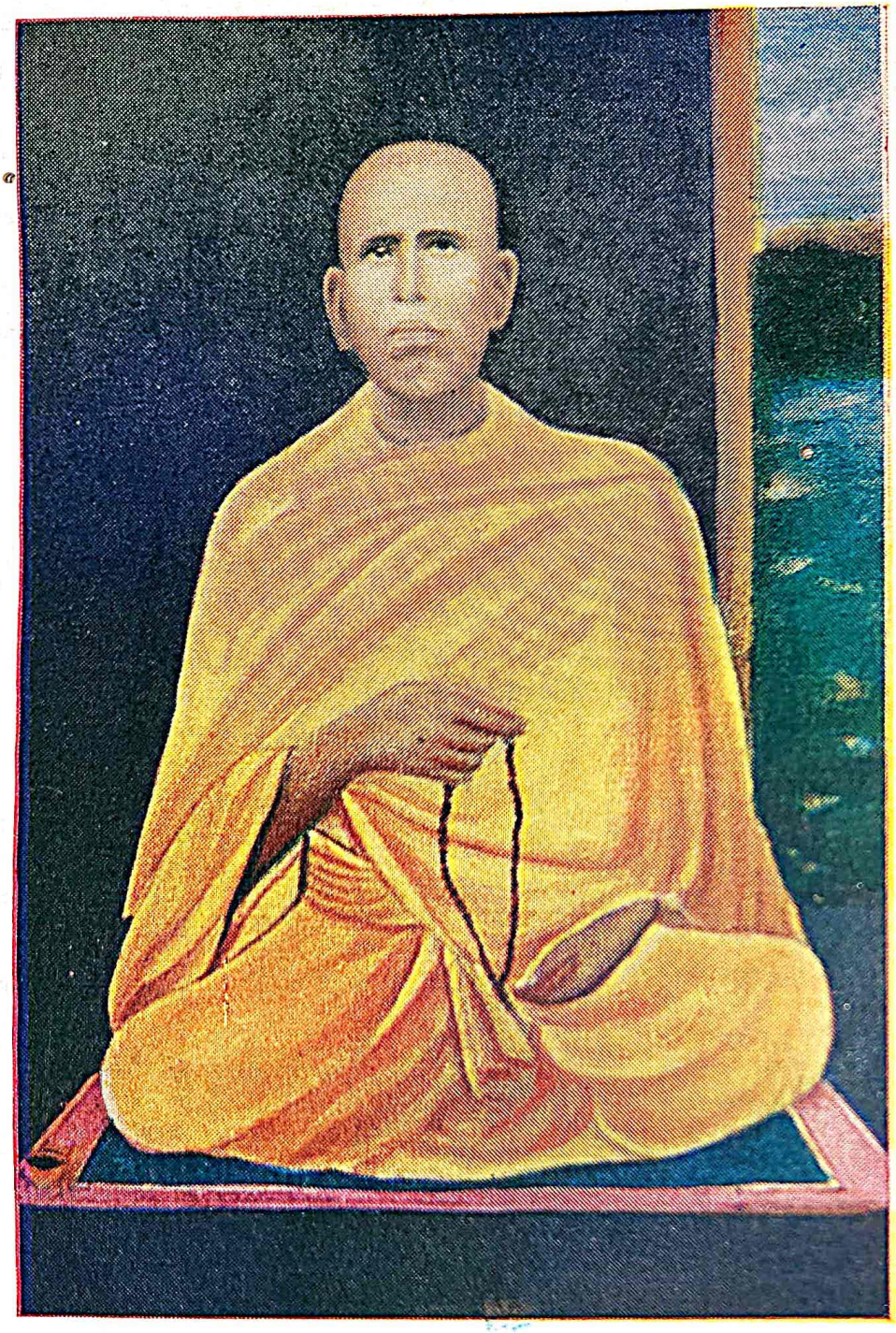

श्री पं० उमापति त्रिपाठी जी महाराज 'वशिष्ठ'

❀ श्रीरामोविजयतेतराम् ❀

❀ श्रीमदुमापति दिग्विजयः ❀

श्रीमदुमापति दिग्विजय

❀ दोहा ❀

वारण सुख दारण विपति, शिव कारण महराज ।
करुणा करुणालय विशद, ग्रन्थ रचावहु आज ॥ १ ॥
जननि अङ्कगत कुच युगल, गहे करत पयमान ।
कभुंइ हँसत लखि मात मुख, बन्दौं रघुकुल भान ॥२॥

❀ दोवै छन्द ❀

रामचन्द्र गुरु मित्र सभासद श्रीमदुमापति जी के ।
बन्दों पद सरोज जेहि वन्दत कोविद कुल जगती के ॥
जिनके छात्र रामचरणाभिध बुध गणेश पुर बासी ।
लाल जीव मुन्शी जेहि सम्पति लहि भे ग्रन्थ प्रकाशी ।३

❀ दोहा ❀

श्रीमदुमापति दिग्विजय, मुन्शी उर्दू माहिं ।
कियो करत भाषा सोई, न्यूनाधिक जँह ताहिं ॥ ४ ॥
श्रीसम्वत् उन्नीस शत, तैंतिस भादौं मास ।
बुधसित गणपति तिथि रचत रामनगर करवास ॥५॥

❀ हरिगीतिका ❀

यक तो न मैं कवि दूसरे बुध रामचरण कहैं यहो ।
यह ग्रन्थ रचहु त्रिपाठि जू को सरल भाषहि मैं सही ॥

या सों सहज ही रचहुँ निज गुरु चरित जेहिं सब जानहीं।
मैं धनावली निवासि बिप्र महेशदत्त सुनामहीं ॥ ६ ॥

❀ दोहा ❀

यद्यपि चरित अपार किय कोविद लै अवतार।
पर मैं संक्षेपहि कहत निज मति की अनुसार ॥ ७ ॥
प्रथम कहहुँ जेहि हेतु श्री महाराज अवतार।
कलियुग में भी पाय जेहि केतिक जीव निस्तार ॥ ८ ॥

❀ चौपाई ❀

जब ते द्वापर युग के अन्ता। कृष्ण चन्द्र जगदीश अनन्ता ॥
और युधिष्ठिर धर्म कुमारा। स्वर्गबास लीन्ह्यो सविचारा ॥
अरु कलियुग आयो संसारा। तब से उत्तम धर्म अचारा ॥
युग प्रभाव भे लुप्त विशेषी। वेद पाठ कतहूँ नहिं देखी ॥
धर्म शास्त्र वेदान्तरु न्याया। मीमांसा व्याकरण महाया ॥
अरु सब विद्यन पाठ न छूटा। धर्म रहित मारग जग लूटा।
जगत पूज्य विप्रन की पूजा। छूटी भयहु निरादर दूजा ॥
अरु भ्रष्टाचारी संसारा। या सों पायहु क्लेश अपारा ॥
यह लखि श्रीशिव कीन विचारा, श्रीशंकराचार्य तनु धारा ॥
यहि विधि अपर देव अवतारा। लै लै कीन दूर अविचारा ॥
पुनि अष्टादश शत इक्यावन। सम्वत् से वह काज सुहावन।
महाराज के कर सों होई। आगे लिखत सोई नहिं गोई ॥

❀ दोहा ❀

जन्मभूमि महराज श्री धीमदुमापति जी के ।
वर्णत सुनहु सुजान सब जो सब विधि सों नीके ॥
श्रीमदयोध्या जीव से साठि कोश दिशि पूर्व ।
गोरखपुर प्रदेश में सरयू तीर अपूर्व ॥
अवधहि केरे राज्य में पिराडी पुरी महान् ।
बसत अहै बहु काल से सकल भांति परधान ॥
जासु पता प्राचीन कवि पुरुषोत्तम अस नाम ।
लिखत मेदिनी कोष में सब विधि पूरण काम ॥

❀ चौपाई ❀

पिण्डी नगर छोहारा लौकी । इन्है कहत पिण्डी कवि सौकी
या सों बहु पुरानि यह नगरी, वत बढ़ाव करिकै किमि झगरी
या में रचीं अनेकन रचना, वरणि सकै को कवि निज बचना
पँतिहा जतिहा सरयू पारी । बसैं विप्र सब श्रुति अधिकारी ।
क्षत्री वैश्य शूद्र कायथ कुल, बसतबिपुलनिवहतसबमिलजुल
ठौर ठौर जस विहित विधाना, धर्म कर्म प्रचलित विधिनाना
काहु न व्यापत दुख संसारी, जासों सब जन चारु विचारी
कोइ उद्यम कोई नृप सेवा । करत चखत या सों सुख मेवा ।
किमि न होहिं इमि प्रजा सुखारी, जहँक्षत्रीकुलनृपतिविचारी
उत्तम वंश विसेन नृपाला । भीम मल्ल अस नाम विशाला
जिनकी सन्तति श्रीमहराजा । उदित नरायण मल्लविराजा ।

राज्य मझौली गद्दी माहीं। अहैं विराजमान गुण गाहीं॥
इनकी कीर्ति पुण्य नृप नीती, विदित मही मण्डल युतप्रीती
भूपति दीन महाजन साधू। जानत सकल नहीं कछु बाधू॥

❀ दोहा ❀

या सों वर्णन की नहीं आवश्यकता कोय।
जेहि जानत संसार तेहि काह कहे यश होय॥
पिता पितामह आदि के नाम लिखत सुनिलेहु।
जन्म कुंडली बहुरि श्री महाराज की येहु॥
महाराज के जनक कर शंकरपति बुध नाम।
सदानन्द पति बुध पितामह का नाम ललाम॥

❀ चौपाई ❀

त्रिभुवन पति प्रपितामह नामा, सकल भांति सब पूरण कामा
महाराज के हैं द्वय भाई। प्रथम लालसी पति बुधराई॥
दूजे बुध विद्यापति नामा। यथा नाम तस सब गुण धामा।
इनकर धर्म ज्ञान पँडिताई। अरु विचार कहु केहि विधिगाई
ऐसे होत महात्मा लोगू। जगदुपकार हेत बहु योगू॥
जिनके कारण नर अज्ञानी। ह्वै सचेत लहैं मुक्ति सुहानी॥
अरु अष्टादश से इक्यावन, सम्वत् सब विधि जौन सुहावन
चारि सहस अठ सै पञ्चानव, वर्ष गये कलिके जब तब भव
आश्विन वदि नवमी बुधवारा, आर्द्रा तीसर चरण विचारा
वृश्चिक लग्न जगत हितकारी। जगदीश्वर शुभ धर्म प्रचारी

श्रुति मारग पालक गुणधामा, रामचन्द्र गुरुवर वर नामा ॥
श्रीवशिष्ठ अवतार करारी । श्रीमदुमापति जीव तेवारी ॥
लीन तबै अवतार सुहावन । पावन सब विधि सबहिं जुड़ावन
तेहि मुहूर्त कर चित्र मनोहर, लिखालखहिंसज्जनअतिनोहर
या महँ चौथे गृह से तीन्हीं । हैं ग्रह रहित सदन लो चीन्हीं
सतयें ते नव सदनन माहीं । हैं यक यक ग्रह तीसर नाहीं ॥

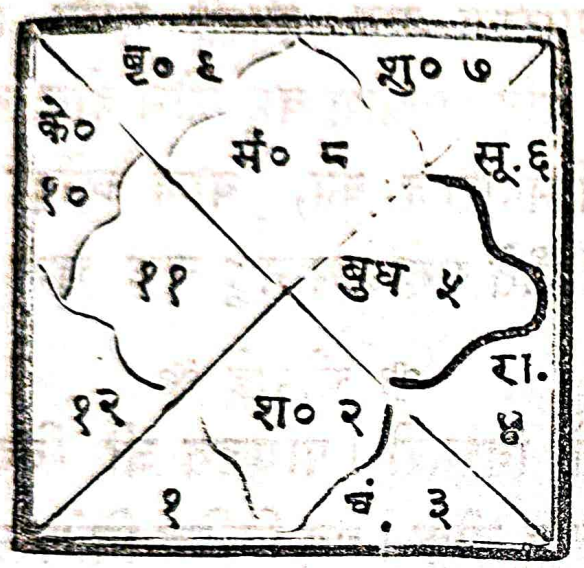

शुक्र तुला के गुरु धन मांही । मङ्गल वृश्चिक वास कराही ॥
ये सब निज निज ग्रह के स्वामी, अरु बुध केन्द्री पूरणकामी
अस सर्वोत्तम योग न देखा । कतहुँ कुण्डली हम बहु पेखा ।
सो किमि होय योग यहि भांती, मनुज कुण्डली कौनविसाती

❀ दोहा ❀

देव भाग्य नर भाग्य से, सदा बड़ा ही होत ।
करि विचार देखहिं सुजन, देव और नर गोत ॥

तब शंकर पति बुध महा, पण्डित जनन बुलाय।
जात कर्म विधि विहित सब ह्वै मन मुदित कराय॥
अरु जाचक नर्तक जनन दान दक्षिणा दीन।
यथा उचित दै सबहिं सब बहु उछाह तिन कीन॥
जो गोधन हाटक रजत अन्नादिक उन दीन।
काह लिखों सुत जन्म व्यय लिखत न लोग प्रवीन॥
वर्णत विद्यारम्भ अरु, काशी गमन विचित्र।
जहँ बसि पढ़ि शास्त्रार्थ बहु कीन होत सुनि चित्र॥
सिद्धि श्रीमहाराज को, बाल क्रीड़ा माहिं।
वर्ष नवक बीते सुखद मानहु यक क्षण माहिं॥

❀ चौपाई ❀

दशयें वर्ष मुहूर्त विचारी। पण्डित जी विद्या अनुहारी।
विद्यारम्भ करायहु नीके। वेद विहित विधि सो बुध ठीके॥
कछुहि दिनन्हमहँपढ़िसबलीन्हा,सबविद्याधिकारिजगचीन्हा
पठित पंक्ति से अपठित केरी, कहत विशेष अर्थ मति हेरी॥
देशीपण्डितजनतहँआवहिं,लखिलघुवयमतिअधिकलजावहिं
पुनिअचरज मानहिं सब काऊ, कहँयहवयकहँ इमिमतिपाऊ
कहहु पढ़ावे को तेहिपण्डित, जामहँबुद्धि प्रताप अखण्डित
जब न दीख पाठक तहँ कोई, जन्मभूमि छोड़ी तब सोई॥
श्रीकाशी महँ पहुँचे जाई। गङ्गा स्नान कीन चितलाई॥
विश्वनाथ दर्शन करि नीके, सुख निवास सब विधिसो ठीके

घण्टा करणक टोला भाई। श्रीत्रिशूल पति के मठ जाई॥
कीन निवास तहां महराजा। जुरन लागि तब द्विजन समाजा
तीनि भट्टनामी तेहि काला, काशी बासी अतिहि विशाला,
कृष्णराम शेष व्याकरणी, ढीठभट्ट मीमांसक वरणी॥
भैरवराम मिश्रनैयायक। तीनिउ शास्त्र खानि गुणदायक॥
दर्शन इन तिनिहुँन के भयऊ। मतिउत्तमता लखिउनगहेऊ
प्राणाधिक सबके प्रिय लागे। इन्हहिं पढ़ावत सब अनुरागे
मीमांसा व्याकरणरु न्याया, पढ़न लागि त्रय शास्त्र सुहाया
पढ़त जो पाठ प्रश्न तेहि आगे, करन लगे तब सब अनुरागे
अरु जो लखत नये तेहि केरे। करत तुरत शुभ अर्थ घनेरे॥
यह चर्चा फैली सब ठामा। जहहिं सुनो तँह इनकर नामा॥
सुनि यह दशा छात्र गणधाये, जो जेहि योग्य तुरत सो पाये
सम्मति करन हेतु वहु पण्डित,आवनलगे जानिमतिमण्डित
भयहु यहां तक यह व्यवहारा, जहां होयकछुअधिक विचारा
तहँ इनते विन सम्मति लीने, कोउ न करत कछु बुध परवीने
करै चहै कोउ कछु विन ताके,निर्णय होय न विन इन आँके
पढ़त पढ़ावत दिन अरु राती,असअवकाश न मिलत संघाती
जो दुई बार बनावहिं भोजन,करहिं तथा पर कछु मन शोचन
पढ़न पढ़ावन की तिथि माहीं, केवल एक बार कछु खाहीं॥
तौनौं रोटी अरु तरकारी। भोजन होत न स्वादु विचारी॥
अनध्याय महँ जब अवकाशा, होत दाल रोटी की आशा॥

सत संगत अरु दर्शन देवा, होत तबै नहिं नित उठि सेवा ॥
एकादशी आदि व्रत माहीं, फल कन्दादि यथोचित खाहीं ॥
दान अपार दान कर देना, प्रकृति पुरानि अहै गुन लेना ॥
जो कछु निकट होत दूसर को, सो दैदेत सकल भूसुर को ॥
भोजन समय छात्रसौ जबतक, खाहिं न भोजनहोत न तबतक
यश अब तक प्रतिदिन अधिकाई, दान नियम देखत हौ भाई
आवत आजु कान्हि के हेतू । नहिं राखत कछु सब है देतू ।
अरु जब कबहुँ राति महँ कोई, इच्छाचर्वणादिकी होई ॥
तबहुँ मिठाई मेवा आदी, सब कहँ दै करैं आप प्रसादी ॥
अरु सन्ध्या वन्दन के अन्तर, गायक वाद्यक जुटहिं निरन्तर
तब सङ्गीत शास्त्र परचारा । होय भली विधि सहित विचारा
डेढ़ पहर द्वय पहर रात तक । यह चर्चा नित रहत न कछुशक
इन लोगन कर शुभ सतकारू, होत यथोचित करि निरधारू

❀ दोहा ❀

एक समय महराज के पिता जीव गुण ग्राम ।
पण्डित शंकर पति लखन आये काशी धाम ॥
जैसे पगु धारा वहां श्री काशी जी माहिं ।
तैसहि पूँछा प्रेम युत जेहि देखा तेहिं पाहिं ॥

❀ चौपाई ❀

हैं कोई विद्यार्थि तेवारी । इहाँ कहहु जो सुनेहु विचारी ॥
छोटे बड़े वहां के वासी । यह सुनि बोले सहित हुलासी ॥

महाराज तुम पूंछत कैसे। काशी वासी कोई न वैसे ॥
जो न तिवारिहिं जानत होई। जो सब देश विदित नहिंगोई।
इहि विधि सब कहुँ सुनतबड़ाई,महाराज ढिग पहुँचे आई ॥
कुशल प्रश्न विधिवत करि पीछे प्रेम मग्न ह्वै पुनि इमि पूंछे
पुत्र तुम्हार जन्मधनि अहई। जानत सब काशी जो रहई ॥
रहत सैकरन और हजारन। पंडित काशी माहिं विचारन ॥
हमहुं रहे बहु दिन यहि धामा, पर कोई जानत नहिं नामा।
हमहिं काह काहुहि कोउ नाहीं, जानत इहँ बहु आवत जाहीं
तुम्हरेहि हित यह अद्भुत कामा, आन हेतु नहिंहै यह सामा
इहि विधि कछु दिन रहि तँहदेखी, नवउछाह हर्षितनितपेखी
आये निज भवनहि युत मोदा रहि रहिउमगतसहितविनोदा
उहाँ यथा विधि पढ़न पढ़ावन, काशी माहिं होत मनभावन

❀ दोहा ❀

कृष्णराम जी शेस के निकट एक दिन एक।
महाराष्ट्र आचार्य शास्त्रार्थ हेतु करि टेक ॥
बड़े धूम धामी यशी आए सहित विवेक।
प्रश्नोत्तर प्रारम्भ किय करिके युक्ति अनेक ॥
यदपि शेष जो निज समय एकै काशी माहिं।
वैयाकरण शिरो मुकुट रहैं दूसरो नाहिं ॥
तदपि महाआचार्य से दबे यथोचित कोटि।
करि न सके जिमि सो करत छोड़ि शब्द की मोटि ॥

इतना सुनि महराज से गई न भई हहाय।
शेष जीव के पक्ष पर बोलन लागे आय॥

❀ चौपाई ❀

इहाँ कि कोटि प्रकट सब काऊ। जेहि सुनिबुधवकैंआऊवाऊ
दीन मलीन अचार्य वेचारा। बूड़हु त्वरित कोटि की धारा
बहुत बेर पीछे उतिराना। निज मैं उतर शक्ति नहिं जाना
हारि मानि बोला यह बाचा, मैं जो सुना सो देख्यों सांचा
सुन्यो रहै श्रीकाशी माहीं। रहत शेष संशय कछु नाहीं॥
बहि लखि आजु भयो सन्तुष्टा, यद्यपि रह्यों प्रथम अतिरुष्टा
पर जो प्रथम बोलि भयो चूपा, कौन रहै कहिए बुध भूपा।
यह सुनि शेष जीव तब बोले, सुनहु अचार्य्य जीव अनमोले
पदवी शेष केरि है मेरी। दीन बुधन अब फिरत न फेरी॥
अरु ए अहैं तिवारी छोटे। सब बिद्यानिधि नहिं कहुँ ओटे
इनकर नाम आपने सूना। होइहि या मैं नहिं कछु ऊना॥
यह सुनिके आचार्य्य प्रवीना, अति आदर महराजहिं दीना
और कहा कि पढ़त तुम काहा, अबहुँ पढ़न कछु बाकी राहा
कहेहु जो कछु निज मुख पाहीं, बड़के शेष सो जानत नाहीं
अरु मेरी इनकी का गिनती, करन योग्य तुम्हरी सब बिनती
यह कहि लहि काशीश निदेशा, गयो अचार्य्य तबै निजदेशा

❀ दोहा ❀

उन्हीं दिनन पूना सितारादिक महाराज ।
स्वामी बावन कोटिके अमृत राउ सजि साज ॥
आए काशी जीव मैं, संग लिए बुध बृन्द ।
जिन्हहि देखि सुर गुरुहु कर ह्वै जातो मनमन्द ॥

❀ चौपाई ❀

अरु सब पंडित ईश्वर रूपा । रहैं परन्तु दोय बुध भूपा ।
सबसे अधिक जासु पंडिताई, अरु श्रेष्ठता विशेष बड़ाई ॥
जगन्नाथ शास्त्री अस नामा । सकल शास्त्र ज्ञाता गुणधामा
दूजे शास्त्री श्रीरघुनाथा । ये सब भांति पूर्ण नहिं गाथा ॥
उभय लाख पंडित महँ पंडित, तेज प्रताप प्रकाश अखंडित
जो जो गुणवर पंडित माहीं । होत रहैं सों सो उन ठाहीं ॥
अरु कौनिउं बिधि ये महँ पूरुष, जेहिपंडितहिलखहिंसोमूरुष
डर के मारे आव बावही, बकन लगत कछू कहि न आवहीं
अरु शास्त्रार्थ करन महं काहुकि,का मजाजकरैजोकछुहाँहुँकि
महराजाधिराज की आज्ञा । परखन हेतु बुधन की प्राज्ञा ।
कह काशीमें जो शुभपंडित. तिन्हहिं बुलावहु दान अखंडित
देव उन्हैं जो मतिमहंनागर,होहिंडरहिंनहिंलखिश्रुतिआगर
यह सुनि कै शास्त्री सब नीके, लेन परीक्षा लगे सुठीके ॥
जुटे सहस्रन पंडित लोगा । लगे परीक्षा देन सुयोगा ॥
यक तो वे शास्त्री वर पंडित । सकल शास्त्र महर हैंअखंडित

दूजे श्रीशास्त्री रघुनाथा। राखत यह स्वभाव निज साथा
जैसे कोउ आगे बुध आवैं। बातहि ऐसे उन्हहिं दबावैं॥
जासों वे निराश ह्वै फिरहीं, फिरि से न परीक्षा कर मन करहीं
जब श्रीमहाराज यह जाना। भयहु पंडितन कर अपमाना।
तब आपुहि पहुंचे तहं जाई, जहां परीक्षा होत भुलाई॥
श्रीरघुनाथ शास्त्रि वर जैसे, सब दिन लेत परीक्षा तैसे।
लेन लगे ताहू दिन सबकी, सुनि कै प्रश्न सकल रहैं दबकी
जासों प्रश्न भयो तेहि काला, उत्तर दिय महराज बिशाला।
यहि बिधि दश बीशक बुधकेरी, भई परीक्षा पूरि न देरी॥

❀ दोहा ❀

तब शास्त्री जी ने कहा आन परीक्षा माहिं।
कत बतलावत आप हैं भला कहत हम नाहिं॥
कछुक देर ठहरहु बहुरि आपहु की भलि भांति।
लेव परीक्षा तबहि सब कहियो तौन पोसाति॥

❀ चौपाई ❀

यह सुनि महाराज पुनि बोले. बचन सुधा सम अतिहिअमोले
जब ते हम आए अरु जबतक, बैठे हैं पूछत जो जब तक।
वह हमरीहि परीक्षा अहई, और काहु की नहिं कोउ कहई।
इतने में आए बिद्यार्थी; श्रीधर शास्त्री केरि धनार्थी॥

❀ दोहा ❀

जिनके हित रघुनाथ अरु जगन्नाथ के नाम।
श्रीधर ने एक पत्र लिखि दिह्यो रहै लखि काम॥

❀ चौपाई ❀

ये व्याकरण शास्त्र में छात्रा । हैं परिपक बिशेष सुपात्रा ॥
लखि सो पत्र परस्पर दोई । लागे हँसन करत बदगोई ॥
आए पक्क पक्क ये आए, यह कहि कै वह हंसे ठठाये ॥
बहुरि उन्हन की लेन परीक्षा, लगे यथा सबको दी दीक्षा ।
पर वै दीन मलिन विद्यार्थी, उन सन्मुख किमि होहिं जयार्थी
जो कछु कहिनि तुरत सो काटा, जात रही उनकी सबठाटा
तब श्री महाराज यह भाषा, शास्त्री जी सुनिये तजि माषा
इन छात्रन कर उत्तम पक्षा, है पुनीत सब बिधि सो स्वच्छा
करहु विचार आप सब भांती, इमि न कहहु जो तुम्हहिंपोसाती
यहै कहत विद्यार्थिन केरे, पद पदार्थ पर अर्थ घनेरे ।
करन लागि श्रीयुत महराजा, शास्त्रिनबहु विधिसाजेहुसाजा
पर क्षण महं सब श्रीमहराजे, शास्त्रिन बचन खंडिचितगाजे

❀ दोहा ❀

तब निज बचन प्रमाण हित शास्त्रिन भाष्य प्रमान ।
दियो सोऊ खंडन कियो श्री महराज महान ।
तब शास्त्रिन निज उक्ति सों चह कछु उत्तर दैन ।
हंसि बोलेह महराज तब सुनह शास्त्रियों बैन ।

❀ चौपाई ❀

अब वहु हर्ष हमहिं भोनीके, जो निज उक्ति करत तुम ठीके
जेहि खंडन महं श्रम कछु नाहीं, हमकहं होइहिगुनुमनमाहीं

जिमि पर्वत उखारि जो लेई, धरती फूल उखारत तेई।
होत न तनिक कठिन तिमियेहू, उक्ति खंड नहिं कछुसन्देहू
यह कहि शास्त्रिन जोकछुभाषा, काटेहु तुरत न कछुभयराखा
जब न रहेउ कछु उडर उपाऊ,तब शास्त्रिन यह बात बताऊ
यही पक्ष पर कल्हि शास्त्रार्थ, आपसे होई कहत यथार्थ॥
सुनि श्रीमहाराज कह अच्छा,कल्हि हम फिरिआइबयहिकक्षा
इहिबिधितीनिदिवसश्रमकीन्हा,शास्त्रिनसबविधिजौकछुचीन्हा
पर न बनाए कछु बनि आवा, हारि गये करिकै सब दावा
रात भरे महँ जो कछु सोचत, बहुरि विचारतबहुविधिखोजत
खर्रा लिखि लिखि करिकेकंठा, आवत प्रातहि बुद्धिअकुण्ठा
सो श्री महाराज के आगे, होत अशुद्ध सकल यक लागे॥
यह वृत्तान्त श्रवण करिराजा, अमृत राउ जी बुधन समाजा
अपने निकट बुलायहु नीके, भो शास्त्रार्थ सकल विधिठीके
तबहुँ तेही बिधि भा शास्त्रार्था, शास्त्रिन दीन न उतरयथार्था
अरु ह्वै गये मूकशास्त्री जब, अमृत राउ महाराज तहां तब।
श्री महाराज जीव की पूजा, कीन्ह भली बिधि तजि के दूजा

❀ दोहा ❀

तब ते श्री महराज के नाम केर चहुँ फेर।
डङ्का बाजन लाग श्री काशी में शुभ टेर॥
जिमि काशी सो जाय किय चित्रकूट महाराज।
बहुत भांति शास्त्रार्थ सो वर्णत अब करि साज॥

सम्वत अष्टादश शतरु छीहत्तर महँ जब्ब।
रहेहु पचिसवां वर्ष श्रीमहाराज की तब्ब ॥
करन हेतु पाण्डित्य मत पर दृढ़ बाद बहोरि।
दुर्जन मत खण्डन हितहि बहु अँग्रेज निहोरि ॥

❀ चौपाई ❀

पहुँचे चित्रकूट महराजा। जहां सिद्ध जन केरि समाजा ॥
उन्ह महँ कृष्ण राम यक शास्त्री, सबकीकीन सलाह यकात्री
अरु शास्त्रार्थ अरम्भ्यहु नीके, तीनि दिवस सोभोविधिठीके
भये परास्त सकल मत दूषक, किमिनहोहिंलहिअसमतभूषक

❀ दोहा ❀

चित्रकूट सों जिमि गयहु गवालेर महराज।
अरु शास्त्रार्थ भयो कहत जिमि तहँ भूप समाज ॥

❀ चौपाई ❀

चित्रकूट सों श्री महराजा। गवालेर गे सहित समाजा ॥
गवालेर नृप सभा विभूषण, पंडित चारि प्रसिद्ध अदूषण ॥
छत्रदेव पर्वती सुनामा। खण्ड शास्त्रि तैलिङ्ग मुकामा ॥
महाराष्ट्र नारायण शास्त्री। देवराज मैथिल वरगात्री ॥
करि ग्वालियर भूप बहु आदर, महराजहिं ठहरायहु नागर।
निज समाज महँ ताहि बुलावा, सकलभांति शास्त्रार्थकरावा
छत्रदेव पर्वती पांच दिन, करत रहे प्रश्नोत्तर गिनि गिन ॥
यक दिन बोलि मौन भे फेरी, खंड शास्त्रि करि युक्ति घनेरी

पुनि सब लोग एक ही साथा. लागे बोलन गुनिगुनिगाथा
तब श्री महाराज अस भाषा। बोलहु यकसंग नहिं कछुमाखा
पर जब उतर देन महँ कोई। रुकै बहुरि जनि बोलै सोई॥
फिरि दूसर पंडित मति नागर, बोलै तरण हेतु श्रुति सागर
इहि विधि प्रश्न उतर महं जबहीं, होयरुकावट इहं ते तबहीं
फिरि कछु बोला जाय न कबहूँ; कहत विचारि सुनोबुध सबहूँ
इहि विधि होन लग्यो शास्त्रार्थ, पदपदार्थ जो रहहियथार्थ।
जो जिन कहा उतर तिन पावा, तुरत अशुद्ध भये सब दावा
अरु तत्काल उतर जब नाहीं, दीन सकल सकुचे मन माहीं
बुध समाज जब भै इमिमूका, तब नृपराजतनिकनहिं रूका।
विजय पत्र लिखि श्रीमहराजहिं, पूजि विदाकीन्हींयुतसाजहिं
क्षिति मंडल मह यह परचारा, प्रश्न उतरनहिंबिनहिविचारा
सूझत मनुजहि नीकरु ठीका, चहै पढ़ै वहु ग्रन्थन टीका॥
पर श्रीमहाराज कहँ कबहूँ, मति निर्मलताई सो सबहूँ॥
सोचन परत नहीं कछु बाता, कहत जोय मनु कह्यो विधाता
राह चलाऊ जो कछु कहहीं, सबकी दृष्टि न पहुँचै तहहीं॥
कहब काहु सो किमि बनि परई, सुनितै बचन मनहिमनडरई
इहि कारण है विजय बड़ाई। क्षितितल मैं सबसे अधिकाई।

❀ दोहा ❀

गवाले सो जिमि गयहु महाराज नयपाल।
अरु शास्त्रार्थ तहां भयहु जिहि विधि सुनु सब हाल॥

❀ चौपाई ❀

गवालियर सों श्रीमहाराजे । चले जाय नयपाल विराजे ॥
श्रीसुरेन्द्र विक्रम अस नामा, तहँ कर क्षितिपति पूरण कामा
तिनकी सभा माहिं त्रय पंडित, बहुत प्रसिद्धप्रताप अखंडित
ओझा गौरीनाथ प्रवीना । अरु केदार नाथ अघ हीना ॥
एक कृष्ण बलदायक देवा । ये तीनिउँ सब शास्त्र कहेवा ॥
न्याय व्याकरण अरु वेदान्ता । मीमांसा पाठी तु अनन्ता ॥
सब पण्डितन इकट्ठा कीना । भूपति मणि सब भाँतिप्रवीना
बहु प्रकार शास्त्रार्थ करावा । करत रहे पन्द्रह दिन दावा ॥
पर सब भयेपरास्त कवीन्द्रा,गरुड़हिलखिजिमिहोतफणीन्द्रा
तब बहु धन दैके महिपाला, विदा कीन महराजहि हाला ॥

❀ दोहा ❀

जिमि पहुँचे नयपाल सों लक्ष्मण पुर महराज ।
सोई अब वर्णन करत सुनियो साधु समाज ॥

❀ चौपाई ❀

तजि नयपाल भूमि महराजे, आय लखनऊ माहिं विराजे ॥
ताही समय शाह दरबारी । नृप वखतावरसिंह करारी ॥
रहहिं तहां उनके सुस्थाना । महाराज उतरे युत माना ॥
इहां बसत जितने बुध लोगू । नहिं शास्त्रार्थ करन के योगू
पण्डित राजा अरु दीवानू । जो कोउ रहहिं तहां गत मानू
धर्म कर्म अधिकारी लोगा । लहि सब दर्शन होहिं विशोगा

❀ दोहा ❀

लक्ष्मणपुर सों जिमि गयहु रीवां कहँ महराज।
अरु जिमि भोशास्त्रार्थ तहँ वर्णत खइ करि साज॥

❀ चौपाई ❀

श्रीयुत विश्वनाथसिंह नामा। रीवां भूपति सब गुण धामा॥
ताही समय रहहिं मतिनागर। धर्म धुरीण प्रताप दिवाकर॥
जिनकी पँडिताई बहु भाँती। अरु पंडित सतकार सुहाती।
है प्रसिद्ध चारिउ दिशि माहीं, असनहिं जन जो जानतनाहीं
इहि कलियुग महँ तासम आना, गुणगाहकविचारिगुणवाना
भयो नहीं नहिं होवन हारा। कहँ लगि वर्णउँ करहु विचारा
उनकी सभा माहिं बहु पंडित, सकल पराक्रमयुतगुणमंडित
जगन्नाथ शास्त्रादिक रहहीं। जिन सन्मुख कोइ बात न करहीं
जो बुध जगन्नाथ काशी मैं। रहहिं प्रसिद्ध मुक्ति दासी मैं॥
निज शुद्धता परीक्षा हेतू। बुधन बुलायहु किहेउ सचेतू॥
मणि कर्णिकाघाट करि बासा, गङ्गा लहरी सहित हुलासा॥
रचेउ ग्रन्थ युत पद्यपचासा। जिन्हहिं पढ़त नहिं यमकरत्रासा
प्रति अशलोक एक सोपाना। गङ्गा चढ़ी सकल जन जाना॥
ग्रन्थ पूर जब भयहु सुरसरी। ऊँचे चढ़ि शास्त्री पगु परी॥
ये भामिनी विलास करैया। जगन्नाथ शास्त्री नहिं भैया॥
गङ्गा लहरी इन्हहुँ बनाई। लखहिं सुजन नहिं करत झुठाई।
ताही समय लखनऊ सों चलि, महाराज पहुंचे रीवां थलि॥

विश्वनाथ नृप सभा मंझारी। सिंह समान जाय पगु धारी॥
भूप भेंट होतहि ततकाला। यक बरवा पढ़ि कीन निहाला
नीचे लिखत बांचि सो लेहू, मति अनुसार अर्थ करि देहू॥

❀ बरवा ❀

यस्य हृदोऽवनि जाता जातु न यातु।
विश्वनाथ विश्वाद्यस्सत्वाम्पातु॥

❀ दोहा ❀

याके अर्थ अनन्त पै सभा बोध के हेतु।
महाराजजी जो कहेउ सो सुनि होहु सचेतु॥
महाराज बोले सुनहु जगन्नाथ भावार्थ।
यहि कर हम वर्णन करत जो कछु अहै यथार्थ॥
पर सुनिये चितलाय के, जासों असना होय।
जिमि बन में रोदन किये श्रवण करत नहिं कोय।

❀ चौपाई ❀

यह कहि अर्थ अरम्भ्यहु नीके, जो सब भांति अहैंविधिठीके
लिखत बनत सो मो सननाहीं, अरु न समात हर्ष हियमाहीं
पर यक भाव लिखत सुनिलीजे,सुनिनिजमनगुनिहृदयधरीजे
महाराज वर्ण्यो सुनि भूपा। यामहिं हम यह अर्थ निरूपा॥
तुम पै दया करैं वै रामा। जिनके अंक मांझि सो वामा॥
श्रीजानकी कबहुँ नहिं जाहीं। हर्षित ह्वै तेहि हर्ष कराहीं॥
इमि किमि कहा कहा जिमि अहई। वहयहभावअहैनृपसहई।

राजा लोग महीपति होहीं। अरु सीता महि पुत्री सोहीं॥
वै श्रीरामचन्द्र को प्रेरत। दया करहु नृप पर हिय हेरत॥
जासों चिरञ्जीव नृप रहई। अरु मम माता जो महि अहई॥
सो अहिवाती रहै कृपाला। ताके सुख मैं सदा निहाला॥
यह सुनि सभा चकित भैसगरी, नृप मति डूबि अनँद महँकरी

❀ दोहा ❀

जगन्नाथ शास्त्री तबहिं निज मन कीन विचार।
महाराज की ओर अति लखि नृप केर प्रचार॥
ऐसी कोई बात हम कहि देवैं जेहि माहिं।
नृप जानै पाण्डित्य यह इन महाराज कि नाहिं॥
किन्तु काहु आचार्य्य की अगिले ही की आहि।
ताहि देखि इनहू कहा या महँ संशय नाहिं॥
यह विचारि महराज तब झुँकि कह हे बुधराज।
का यह कोइ पुरान पद है कहिये करि साज॥
महाराज तौ तुरत असि उक्तिहि पहुंचत नीक।
कह्यो पुरानै आइ पद तुम समुझ्यो है ठीक॥
अब हम यक नव पद कहत तेहि सुनिये करि ख्याल।
पर सुनि अर्थ विचित्र तुम जनि हूजियो बिहाल॥
यह कहि श्रीभागवतकर पढ़्यो प्रथम अश्लोक।
मन्त्रोद्धकार रीति पर अर्थ कह्यो तजि शोक॥

जामें निकस्यो नाम शुभ विश्वनाथ नृप केर ।
अरु तिन पिता पितामहहुकर जी नाम सुटेर ॥
अरु नृप कुल कीरत्ति परम्परा केरि जो होई ।
सोऊ निकरी ताहिं सों सुनि हर्षे सब कोइ ॥

❀ चौपाई ❀

देखि दशा यह नृप विश्वनाथा, अति हर्षित भेकहियहगाथा
महाराज नहिं कछु संदेहू । आपुहि केर रचित है येहू ॥
जासों वेद ब्यास जी मेरे । कुल की कीर्ति न कहेउ सबेरे ॥
उन कर अर्थ विदित सब काऊ, सत्य सत्य यह आपबनाऊ
अरु चुप भये सकल बुध तबहीं जगन्नाथ आदिक जो रहहीं
पुनि तदनन्तर सभा मझारी । भो शास्त्रार्थ बुधन सों भारी ।
जो व्याकरण न्याय मीमांसा, में राखत थे पूरण आशा ॥
पर सब भए परास्त तुरन्ता । किमि पावैं वै इन कर अन्ता ॥
तब भूपाल मौलि महराजहिं, धन मणि तुरग दीनयुतसाजहिं
दै पूजेहु बहुभांति निहोरी । जिमि पूजन विधि शास्त्रकहोरी
पर महराज नियम सब काहू । विदित देत जो होवत लाहू ॥
तुरतहि सब बिप्रन दै दीना । जो तहँ रहहिं बहुत परवीना ॥

❀ दोहा ❀

ब्रह्मावर्तहि जिमि गयउ रीवां सों महराज ।
बाजी राव नृपति सभा मैं युत सकल समाज ॥

श्री मणिराम दास आवनी सेना

भयो तहां शास्त्रार्थ वहु भांति कहत सुनि लेहु।
गङ्गा दक्षिण कूल पै है सो नहिं सन्देहु ॥
रीवां ते महराज जब विदा भये तेहि काल।
वाजीराव मरहटा रहैं विदूरि निहाल ॥
महानृपति के निकट सों वहु नामी बुध केर।
होत रहै सतकार दै मणि धन भूषण ढेर ॥
पर चौरासी बुध तहां सुर गुरु सम नृप पास।
रहत राघवानन्द मुख सब विधि पूरण आश ॥

❀ चौपाई ❀

उनकी मति पाण्डित्य बड़ाई, कहहु कवन विधि हम सबगाई
असि विद्या नहिं है जग माहीं, जेहि वै बुधवर जानत नाहीं
तब बिचार किय श्रीमहराजा। देखिय यह भूपाल समाजा ॥
राज सभा महँ पहुँचे जाई। जो विदूरि महँ अधिक सुहाई
पढ़ि यक पद्य नवीन अशीशा, सुनि आशय अतिमुदितमहीशा
कह भूपाल काह तब इच्छा, अहै कृपा करिये दै शिक्षा ॥
यह सुनि महाराज अस भाखा, सुनहु भूप तजि कै सब माखा
तुम्हरी सभा माहिं जो पण्डित, सो शास्त्रार्थ करैं मतिमंडित
वाजीराव भूप यह वानी। सुनि अपने जिय अचरज मानी
कह मम सभा माहिं बुधनागर, करन चहतशास्त्रार्थ उजागर
कवनि कवनि विद्या पढ़ि लीन्हीं; जोशास्त्रार्थकरनमतिकीन्हीं
यह सुनिकै कह श्रीमहराजा, क्या मूर्खवत प्रश्न तव राजा

कहु पण्डितन केर का नाहीं, पढ़ा होत शास्तर जग माहीं ॥
प्रश्न होहिं तब और सों सारे, उत्तर देत रहब हम भारे ॥
जासु उत्तर नहिं मिलै महीशा. गुनु सो शास्त्र न पढ़ाकवीशा
सुनि यह उतर अनुत्तर कारी, बाजीराव भरी सिसकारी ॥
अरु ललकारे सब निज पण्डित, जोसबविद्यनमाहिंअखंडित
तब चौरासी बुध यक ओरा। अरु यक ओर बुधन शिरमोरा
भो शास्त्रार्थ इहां लगु भारी, नृप बुध मूक भये हिय हारी।
यद्यपि भूप बहुत ललकारे। बोलहु बोलहु मम बुध सारे ॥
पर को बोलै अरु का कहई। कहँ तेहि उतर देन मति लहई।
जासों मनुज केरि गति भाई, मनुजहिं संग होत चलि आई।
नहिं कहुँ ईश्वर सँग गतिनरकी, वरु मति होय सहसबुधवरकी
मानी हारि सकल बुध वृन्दा। महाराज तब भयहु अनन्दा
विजय पत्र नृप सों लिखवाई। बुधनि कोविदहि दीन दिवाई
अरु वहु मुद्रामणि भूपाला। दीन महाराजहिं ततकाला ॥
पर श्रीमहाराज गति वोही। कीन दीन विप्रन कहँ सोई ॥
तनिक न राखेहु अपने पासा, कबहुँ नर हीतिन्हहिधनआशा

❀ दोहा ❀

जिमि विदूरि सों अवध में दर्शन सिंह समाज।
महाराज पहुँचे कहत सुनहु खई करि साज ॥

❀ चौपाई ❀

प्रसिध अवध मण्डल मैं राजा, दर्शन सिंह बीर शिरताजा ॥

उनकी सभा माहिं दिनराती, ठाट राज राजन की भांती ॥
सीताराम आदि बुध भारी । रहत हते तेहि सभा मझारी ॥
जब श्रीमहराजहि नृप देखा । अतिशयजन्मसफलकरिलेखा
पूजा कीन भली विधि ताकी, जिमिपूजनविधिश्रुतिमहँटांकी
और निरन्तर भक्ति सदाही । महाराज मैं रही अथाही ॥

❀ दोहा ❀

अवधपुरी सों जिमि गयहु महाराज हरि द्वार ।
अरु जिमि भो शास्त्रार्थ तहँ कहत सो सहित विचार ॥

❀ चौपाई ❀

एक समय श्रीयुत महराजा, हरि द्वार जी माहिं विराजा ॥
करन हेतु असनान पुनीता । जो पुनीत थल श्रुति महँ गीता
तहँ धरणी धर बुध नयपाली, सहस शिष्य युत वरमतिशाली
तीर्थवास गङ्गा तट करई । श्रुति चर्चा करि जड़ता हरई ॥
करि शास्त्रार्थ केरि अभिलाषा, शिष्य पढ़ायहु सों इमि भाषा
महाराज ढिग सो चलि आवा, निजगुरुप्रणममगुरुहिसुनावा
महाराज कह सभा तुम्हारी । हम आइब सब करहु तयारी ॥
यह कहि नियत समय पर आपू, गयहु सभामहं तनिकनदापू
दर्शन होतहि बुध धरणीधर, कीन्ह प्रश्नवर काव्य शास्त्रकर
नीचे लिखा बांचि सो लेहू, कठिन समस्या नहिं सन्देहू ॥

❀ बसन्त तिलका छन्द ❀

हारे हरे हिम करे मकरे करे च ।

कीजे कवीन्द्र कछु वर्णनआपएव,मेरो नहींकछुअहैवरप्रश्नदूजो
यासों कहौं यह भली विधि सों जु सूजो ॥

❀ चौपाई ❀

यह सुनि महाराज अस कहेऊ, यहै प्रश्न बुधवर जो रहेऊ ।
तौ व्याख्यान करत हम भारी, सुनिये सकल विचारिविचारी
यह कहि लाग्यो करन बखाना, सत्ताइस दिन लौं न सिराना
भाव विलक्षण कहेउ अनेका । बुधन बदन पर दै दै छेंका ॥
धरणीधर आदिक जो तहवां, रहे महात्मा सब गुण गहँवाँ ॥
सुनिकै चकित भये तेहि काला; बोलि न सके मलीनविहाला
छोटे बड़े रहे जो कोई । वाह वाह सबके मुख होई ॥
अट्ठाइसयें दिन धरणीधर । कीन विनय बहु भांति बुद्धिवर
अरु पुनि इमि भाषा कर जोई, महाराज तुम समनहिं कोई ।
तुम रवि सम हम बालू रेनू । तुम्हरेहि तेज प्रकाशित जानू
तव अपार गति है किमि वरनी, यक से सौ असंख्यवरकरनी
सब सामर्थ्य आपु महँ आई, मम धृष्टता क्षमिय बुधराई ॥
अब व्याख्यान समाप्त करीजै, विजय पत्र हम सों लै लीजै
यह कहि लिखि जयपत्र निहोरी, दीन महाराजहिं कर जोरी
तब व्याख्यान समापन कीन्हा, महाराज तेहि निजवशचीह्ना
लवटि वहां सो पुनि उहँ आए, जहं सो प्रथमहिं उहांसिधाये

❀ दोहा ❀

जनक पुरहि जिमि गयहु श्रीमहाराज ठटि ठाट।
अरु जिमि भोशास्त्रार्थ सो वर्णत सुनिकरि चाट॥

❀ चौपाई ❀

जनकपुरी मैं यक अति बूढ़े, पण्डित रहत कहत मति गूढ़े।
उन सों सत्ताइस दिन ताई। भयो महा शास्त्रार्थ तहाँई॥
जो कछु कहेउ महात्मा सोई। महाराज खण्डन कियो ओई
महाराज जो जो कछु भाख्यो, अपनी कोटि बराबर राख्यो
अट्ठाइसयें दिन जब देखी, इहां कि बुद्धि अपरिमित शेषी॥
अरु निज शक्ति लखीअति ऊनी,तबबोल्योनिजमनकरिचूनी
हे बुधराज सरस्वति मेरी। भई वृद्ध नहिं शक्ति घनेरी॥
अरु तव सरस्वती अति युवती, प्रवलकहत जो कछुसबफवती
या सों तब सम्मुख कछु नाहीं, मैं कहि सकत सोंचिमनमाहीं
तेरी कोटि अटल बुधराया। कहत नहीं करिकै कछु माया॥
मैं का कहहुँ कतहुं कोउ नाहीं, पण्डित जो बोलै तुम पाहीं
अतनी भई अवस्था मेरी बुध देख्यो वर बुद्धि घनेरी॥
वाद बिबाद सहस्रन सङ्गा, भयहु बहुत विधि रङ्ग विरङ्गा॥
पर द्वय बात न देखी कतहूँ, तो सन कहत न मृषा तन महूँ॥
यक यह बात कि जो मैं खण्डी, समाधान करि काहुनमण्डी
दूजे श्रवण सुन्यों मैं रहई। अमृत रहत बुध बचन में अहई
श्रवण सुना पर कबहुँ न देखा, सो बुधवर सब विधिमैं पेखा

समाधान मम खण्डन केरो, ऐसो तुम कीन्हेउ करि घेरो ॥
करवट लेन केर अवकाशा, जासों मोहिं न मिलेउ खुलासा
अरुतवबचनामृतचखिदुखिया, भयहुमोरमनसबविधिसुखिया
कहँ लगु कहहुँ मुक्ति अभिलाषा, भूलि गईमोहियहरसचाखा
अब आशिष मेरी मुख कोटी, लीजै बुधवर सकल सकोटी
अरु दिग्विजय पत्र पुनि लेहू, धन्य धन्य तब जन्म अहेहू
यह कहि विजय पत्र लिखिदीन्हा, महाराज ले गमन सुकीन्हा

❀ दोहा ❀

अवधपुरी में जिमि कियो, अचल वास महराज ।
सो अब वर्णन करत सुनि लीजे सुजन समाज ॥

❀ चौपाई ❀

इन्हैं छोड़ि शास्त्रार्थ वहूता, भये सकल विधि सों मजबूता
नदिया शान्ती पुर अरु वेतिया, दरभङ्गा जयपुर बुध पंतिया
योधपुरादि अनेकन भूपति, सभा माहिं शास्त्रार्थसहितयति
नानाविधि भय विजय बड़ाई, सुजश भली विधि जगगुरुपाई
काशी जी सें पश्चिम ओरा । कोश दशक पर थल यक ठोरा
गंधिया नाम अहै अति नीका, तहं वस महादेव बुध टीका
उनसे परम हंस वर राजा, राम निरञ्जन स्वामी भ्राजा ।
अरु श्रीमहाराज जी दोई । कछु दिन पढ़्यो रहैं नहिं गोई ॥
सब कहुँ फिरि फिराय महराजा, आयहु तासु दर्श के काजा
वै श्रीमहाराज वर केरी । मति अपार गाम्भीर्य घनेरी ॥

वर औदार्य्यसुशीलआदिगुन,लखिअतिमुदितभयेअरुसबसुन
बोले फिरब फिराइब तब तक, पाई कछु काहूँ सो जब तक
अरु जब कछु काहू सों नाहीं, मिलत आपने देत पराहीं ॥
तब सुस्थिर ह्वै के यक ठाईं। बैठब चही भ्रमण कहुँ नाहीं
जो यह कहहु कि देनै देना, केवल नहिं कहुँ कहुँ कछु लेना
कहुँ तो कबहुँ कोइ मिलिआइहि,तबवाणीविलासकियजाइहि
ताकर हाल सुनहु यह अहई, हम देखा वहु कछु मन लाई।
सब कछु है बुध यह संसारा, पर तुम सन नहिं बोलन हारा
भरत खण्ड में है नहिं होई। चाहै गाल बजावै कोई ॥
तब अवतार सृष्टि इहि माहीं। उपमा रहित है संशय नाहीं
अब कहुं अचल बास करि नीके, निज भावना काम करो ठीके
अरु विप्रन्ह कहँ विद्यादेहू, सुजशी अधिक सुजश लै लेहू
यह सुनि विन्ध्याचल पर गयऊ, विन्ध्येश्वरी दर्श शुभकियऊ
वहँ यक पत्र लिखित पर देखा, देवी आज्ञा निज पहँ लेखा
तुलसीदास कवित यक वामें, लिखो हतो आशय यह जामें
रघुनन्दन महँ नहिं जेहि नेहू, वृथा जियत जग सो धरि देहू
यह विलोकि श्रीअवधहि आये, रघुबर में निज भाव लगाये
अष्टादश शत बहुरि तिरासी, सम्बत् में भे अवध निवासी
इहँ कुप्पा शास्त्री ग्वालेरी, आये जिन मति हती घनेरी ॥
नदिया शान्ती पुरी गोपाला, मोद भट्ट आचार्य विशाला ॥
बहुरि अनन्ताचारी आये। ऋद्धिनाथ मैथिल मन भाये ॥

सिद्धिनाथ द्वारकनाथोझा, ये त्रय जनकपुरी के ओझा ॥
पुनि काशी वासी बहुतेरे। श्रीगणेश शास्त्री बहु सेरे ॥
मुन्नू व्यास विदित षट् शास्त्री, काष्ठ जिह्व स्वामीवरगात्री
बहुरि देश देशन ते शास्त्री। आए नेकन विद्या पात्री ॥
सबहिं रही अभिलाषा भारी। निज निज विद्याशक्तिविचारी
करब जाय शास्त्रार्थ अखंडित, सुनत त्रिपाठि बुधन महँपंडित
इमि विचारि निज निज मन आये, इहां कहां सो वातदेखाये
सच मन्दर परिमाणु न्याया। भई तनिक नहिं व्यापी माया
कौन करै शास्त्रार्थ कवीशा। नाये सकल चरण पर शीशा
अरु कछु दिन रहिरहि निजविद्या,साफकीनतजिकैसबनिन्द्या
पढ़्यो जन्म भरि शास्त्र घनेरो, अन्त न पायो जग गुरु केरो
अन्त लहैं किमि पंडित वेचारे, विद्या रूप आप तनु धारे ॥
अरु नारायण रूप करारी। किमि समता कोउ करै अनारी
शास्त्र पुराण सकल विधि गावैं, ऐसे लोग अनन्त कहावैं ॥
जो कोइ अन्त लहै फिरि काहेक, नाम अनन्त रहैशुभदायक

❀ प्रज्झटिका ❀

सुनिये मन्दर परिमाणु न्याय,हम कहतअर्थ भलिविधिबनाय
जेहि क्षीर समुद मन्दर पहार, चौरासि लाख योजन अपार
बूड़्यो तहँ बूड़ब कौन बात परिमाणु करे अति लघुहि गात
घर के झरोख रवि किरण जात, तामैं कणुका जो वहुलखात
यक कणुक तीसवां भाग जोय, परिमाणुकहतकविलोगसोय

फिरि शेष भणित मन्दर समान ताको खंडन मंडन विधान
जिन कीन कहौ परिमाणु रूप, अबके बुध बूड़ि न होहिंचूप
परिमाणु जलधि अंजुलि समान, बूड़ैं असंख्य यह बातमान
महराज छात्र जो अतिहि छोट, तेहि सँगसुबुद्धि की भरीमोट
नहिं बोलि सकै तासों कवीन्द्र, समुझै अपने मन वरु सदीन्द्र

❀ चौपाई ❀

पण्डित सार्व भौम यह नामा, महाराज कर है गुण धामा
यासों काशी अरु नयपाला। काश्मीर जहँ वसु बुध जाला
नदिया शान्ती पुर पण्डितघर इन्हैं आदि जहँ रहैं मातवर
जहँ कहुं वाद विबाद शास्त्रकर होत तहां सों आवत बुधवर
अथवा निज निज पत्र लिखाई, पठवत अहैं अवध कहँ धाई
सभा मध्य निर्णय दिन राती। होत रहत लिखि उत्तर पाती
चली जात सबके ढिग काहीं। जो यहँ आवत सुनत यहांहीं
इहै एक अद्भुत नहिं कामा। सकल कार्य हैं अद्भुत सामा
अरु संसारी उपमा हीना। किमि वर्णैं कोइ लोग प्रवीना।
राम जानकी नवमी माहीं। जिमि उछाह कहि जातसो नाहीं
माघ शुदी पाचैं सो होई। होली उत्सव तनिक न गोई॥
चैत्र पंचमी लग सो रहई, यह उछाह किमि कोकवि कहई
यामें भूषण बसन अनेका। सेवक छात्र लहहिं बिन छेंका॥
नृत्य गान बाजन अरु रङ्गा, धूम धाम मनु सैन्य अनङ्गा॥
वर्णनीय नहिं सो उतसाहू। दर्शनीय देखहु सब काहू॥

प्रतिदिन ढाई मन उड़ि जाई। अबिर गुलाल न तनिकभुठाई
नव बति झरत रहत दरवाजे। समय समय पर करिसबसाजे
सकल बादशाही है ठाटा। देखहु जाय चहै जेहि बाटा॥
मुन्शी दारोगादिक जेते। अधिकारी शुभ लक्षण तेते॥
धर्मात्मा सुशील अरु ज्ञानी, हैं सिगरे किमि कहौं बखानी
निजनिज कार्य करतसब नीके,कबहुँ न रहतचित्त सों फीके।
आज्ञा होत जाहिं जो कोई। मनहुँ प्रथम कै राखत सोई॥

❀ हरिगीतिका ❀

जय भद्रकालि प्रताप मुन्शी सम सुलेखकना कहूँ।
शिवदिहल राम समान नहिं मतिमान दारोगा चहूँ॥
बुध क्षेम करण प्रसिद्ध कवि हैं रचत देर न लावहीं।
मथुराप्रसाद करिन्द अतिशय सभा युक्ति लखावहीं॥

❀ चौपाई ❀

कहँ लगु सबके गुण अरु नामा,लिखेजायँ सबविधिशुभधामा
जो वहँ रहत करत शुभ कामा, तासम अपर केरि नहि सामा
हाथी घोड़ ऊँट वृषभादी। धेनु छागवर मेष सुवादी॥
शुक शारिका आदि सब जीवा, शुभभोजनलहिप्रमुदितपीवा
वन्धन काम तिन्हैं कछु नाहीं, जेहिवर भोजन मिलतसदाहीं
जानत बहुरि सदा मन माहीं, टहल न लेइहि कोउ हम पाहीं
अरु न कबहुँ नीचे कहँ जाना, होइहि सकल भांति कल्याना
जब तक जियब रहब तब ताहीं, जीवन मुक्ति कछू शकनाहीं

अन्तकाल लहि मुक्ति विशेषी, विचरब हरिपुर सबसुख पेखी
यहै सत्य नहिं कछु सन्देहू । महाराज दर्शन जिन केहू ॥
मानहुं सकल देव तिन पूजा, अब करणीय रह्यो नहिंदूजा ॥
अरु महराज कमल मुखबानी, सुनी भाग्यवश जो जगप्रानी
मानहुँ सब श्रुति शास्त्र पुराना, श्रवण महात्मलह्योविधिनाना
अरु महराज चरण की सेवा । कोन लहेउ मानहुं सब मेवा
कबहुँ मनोरथ करत न सोई । सुर पुर बसन केर नहिं गोई ॥
सकल स्वर्ग सुख तेहि यहि ठाईं,करिविचारसमझहुचितमाईं
श्रीमहराज कृपा अवलोकू । सकल पदारथ देत न शोकू ॥
अरु को होत न दाहिन ताही, कृपा दृष्टि देख्यो गुरु जाही
चण्डालहु धर्मात्मा होई । मूरुष पण्डित होत न गोई ॥
कृपण उदार होत क्षण माहीं, सतसंगतिगतिविदिततहांहीं ।
तुलसीदास सुकवि जस लिखई, दोहा माहिं सकलजनसिखई
आगे लिखत देखि सो लेहू । तिन्हहिं केरि नहिं कछु सन्देहू

❀ तुलसीदास जी का दोहा ❀

सात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला थक अङ्ग ।
तुलै न ताहि समान मिलि, लव निमेष सतसङ्ग ॥

❀ चौपाई ❀

यह आशय महराजहि केरी । सतसङ्गति मैं फुर मैं हेरी ॥
पर नहिं सबहिं सुलभ यह भाई, जा पर श्रीरघुबीर सहाई ॥
वह तहँ पहुँचि सुफलनिजजननू ,करतसदानिजमनकरिमननू

न रहि चहो निज जनस्वारथहित, असि चाहना करै दैकैचित
करत रहिहिं चाहन जो कोई । अवशि तहां पहुँचिहि नरसोई
दीन दयालु अतिहि महराजू, अन्तर्यामी बुध शिरताजू ॥
सबहि कहे बिन सकल मनोरथ, देत न तहं उनकरकछुसोरथ
दानिन में बिन श्रीशिवजी के, ताको उपमा नहिं यह ठीके
दानि शिरोमणि कर्ण सुआला, लिखतसदाकविजनकीमाला
उनके दान प्रशंसा भाई । केवल तीनि बात में आई ॥
प्रथम बात यह है तिनकेरी । जो दरिद्र आवत तेहि हेरी ॥
उठिकै मिलत प्रेम करि नीके, नहिं दुराव राखत कछु जीके
अरु दूसरि यह बात बखानी, जो दरिद्र मांगत कहि बानी ।
दूना तासु देत ततकाला । जासों सो ह्वै जात निहाला ॥
बात तीसरी यह तिन केरी, दीनहि दै कछु कहत न फेरी ॥
जब वह चलत जात कछु दूरी, तेहि पहुँचावन छोड़ि गरूरी
अरु है भाव इहां यह भाई । तनिक कहत नहिं बात बनाई ॥
सुनि दरिद्र कहँ ता घर माहीं, पठवत धन तेहिकछुश्रमनाहीं
बात दूसरी यह इहँ केरी । जो आइनियरु याचक फेरी ॥
कहे बिना तेहि करत अयाची, सब विधिबात अहै यहसाँची
तीजी बात एक जेहि चाहो, तेहि शत देत समुझि मनमाहीं
चौथी यह कि देतयक वारा । जेहि तेहि देतसदासविचारा ॥
अरु पाँचई बात यह नीकी, दा अक्षर तजि ना नहिं ठीकी ॥
बार बार चहै याचक याचै, देहिं प्रेमहीं सो यह सांचै ॥

कल्प वृक्ष दूजो बड़ दानी । लिखा जात यह सब जगजानी।
नियम ताहु कर इहां अभाऊ। वह मांगे पर देत सदाऊ॥
शुद्ध अशुद्ध मनोरथ केरा । करत विचार न निज मन हेरा।
इहां सकल पावत बिन मांगे, अशुध मनोरथ नहिं तेहिआगे
फिरि किमि देहिं अशुद्ध पदारथ, जानत हैं सबशास्त्रयथारथ
जो विचार कीजै यह भाई। इतना धन कहँ से तहँ आई॥
काहे सो कि नियम यह अहई, श्रीमहाराज केर बुध कहई॥
मन वच कर्म न करत उपाई, धनहित यह जानत सब भाई॥
तौ विचार करिये किमि पानी, आवत नदिन मांह जनज्ञानी
अरु जल जलद कहांसोलावत,धरणिनाजबहुकिमिउपजावत
जिमि जगहित श्रीराम कृपाला, सब पहुँचावत दीन दयाला
तिमि पहुँचावत प्रतिदिन तहऊँ, समझहु सुजनबहुतकाकहऊँ
करुणा कल्पलता स्तव एकू। शुभ सुन्दरी छन्द महँ नेकू॥
महाराज रचि रघुबर पाहीं। कछु निज भाव कहेउ तेहि माहीं
ताके एक पद्य कर येहू। है शुभ अर्थ जानि बुध लेहू ।
अयि श्रीराम विना तव दाया, वसुन्धरा निज नाम झुठाया
यद्यपि सत्य नाम यह तासू। वसुधा नहिं कछु मृषा विलासू
वसु कहे धनहिं धरै जो कोई वसुधा तासु नाम फुर होई ।
पर न करहु जापर तुम दाया, तेहि न देत सो कछु रघुराया
जापर दया करत तुम नीके। काम धेनु ताकहँ सो ठीके॥
यह लखि कांपत हृदय हमारा, करत दिवा निशियहीविचारा

मेरी मुक्ति कवनि विधिहोई। दाननियमनिवहिहिकिमिसोई
इमि न होय की कम निज दाया, करहु कबहुँ मोपर रघुराया
अरु मम निकट आउ कोउभूखा, लवटिजायलहिकेअतिदूखा
जो कोइ कहे कि नहिंविन दीने, मिलत कछू वै नाहिं प्रवीने
कहहु विभीषण और सुदामा, कब केहि दीन नगर धनधामा
जासों लहेहु नगर वर दोऊ निज लखि लजतअमरपुरसोऊ
इहि कारण उहँ सब कछु रहई, कछुक उपाय करन नहिं परई
केवल रामहि करत उपाई। मनुज किहे का होत भलाई॥
नातरु विनु सहाय इमि पाये, बनतं कबहुँ कछु नरन्ह सहाये
जासों श्रीमहराज गोसाईं। निज कुमार वय सौं सब ठाईं॥
याचक सों न कहेहु ना अक्षर, निवहत सदा सुखहिंसोवासर
अचरज होत देखि नर काहीं। गुनत रहत अपने मन माहीं
यक दिन अवध नृपति शुभनामा,मानसिंह मतिवरगुणधामा
श्रीमहराज निकट थे बैठे। सन्ध्या करण हेतु गुरु ऊठे॥
तनिक चरण लरबर ह्वै परचऊ, अवध भूप तव पूछत भयऊ
कारण कवनि चरण परु ढीला। दारोगा बोल्यो युत शीला
आप भली विधि जानत अहई। जो कछु नियमइहांकर रहई
आज पांच दिन भे महराजू। जलहु न पियहु बनैकिमिसाजू
द्विज अभ्यागत साधुन काहीं। दीन सैकरन मुद्रा आहीं॥
अरु अपना फल हारउ नाहीं। करत रहत यह धुनि मम पाहीं
सकल देहु दीनन्ह कह भोजन हमसे अब नहिं बहुतप्रयोजन

यह सुनि अवध भूप बहु शोचे, निज मन में बहु भांतिसकोचे
जब श्रीमहाराज फिरि आये। तब बोले कर जोरि सुहाये॥
मोहिं एक लागेहु बड़ पापू। प्रायश्चित बताइय आपू॥
धर्मशास्त्र मैं बहुतेक देखा। प्रायश्चित्त न तेहि कर पेखा॥

❀ दोहा ❀

यह सुनि श्रीमहराज कह, कहत कहा हौ भूप।
सत्य सत्य यह बात है, तौ कहु होहु न चूप॥

❀ चौपाई ❀

यह सुनि मानसिंह नृप बोले, बचन सुधा समअतिहिअमोले
अवधपुरी के हम हैं राजा। नृप के धर्म कहत करि साजा॥
जासु राज्य महँ प्रजहि कलेशू, होत सो पापी होत नरेशू॥
अरु जहँ विप्रहि होइ कलेशा, तेहि क्षितिपतिकहँ पाप हमेशा
अरु जहँ विप्राधिप गुणखानी, जगत पूज्य ईश्वर सम मानी
कष्टित होहिं तहां कर पापू। है अथाह यह वेद अलापू॥
अरु नहिं प्रायश्चित्तहु तासू। लिखा वेद हम कीन तलासू।
वह पद वेद लिखित अबबांचा, मोरे समय भयहु सो सांचा
मोरे राज्य माँझ सो आपू। कीन उपास करौं का जापू॥
इमि नृप बचन सुनत महराजा, बोले सुनहु भूप सिरताजा
जो अरम्भ हम तुम्हरेहि राजा, किरति उपास केर करिसाजा
अरु जौ तासो हमहिं कलेशू। मिलत मिलतअघतुम्हहिंनरेशू
अरु जब ये बातैं नहिं दोऊ। तौ किमि दोष तुम्हैं कहँकोऊ

देखहु नियम उपास करनकर, हमहि सदा सों आइ बुद्धि वर
जो प्रवन्ध किय चहहिं कुवेरू, तौ न होइ निज मन हम हेरू
दूजे प्रतिक्षण होहुँ सुखारी। इहि उपास सों कहत विचारी
या महिं तुम्हहिं न दुख कछुचाही, जन्म स्वभावमोरयहआही
जो कछु होय आन को दीजे, भोजन सों नहिं हर्ष करीजे ॥
केवल सो शरीर निर्वाहू। भोजन सों न दूसरो लाहू ॥
ज्यों ज्यों धन दैकै हम खाली होत अहैं त्यो त्यों सुख हाली
मुदित हृदय फूलत नित मेरो। भरत जात अरु हर्ष घनेरो ॥
अरु धनहूँ भरतै चलि जाई। घटत दिये नहिं राम सहाई ॥
यह माहात्म्य राम जू केरो। जो मम तन धन मित्र बड़ेरो ॥
इष्ट सकल विध है न संदेहू, कृपा दृष्टि राखत गुनि लेहू ॥
खाली भरत रहत सब काहीं, है स्वभाव उन सुनु श्रुतिमाहीं
यक दिन बाल अवस्था माहीं, निज कांठे पर चढ़े उछाही ॥
उहां करोरिन मुद्रा केरे। सीसा झाड़ फनूस जड़ेरे ॥
तेहि लखि निज कर कमल उठाई, चाँदी गोला मारेहु धाई
शब्द भयहु झन्झन सुनि आपू। भये मुदितमननहिंकछुदापू
गोले मारि मारि बहुतोरे। सीसा झाड़ आदि सुख बोरे ॥
दास एक तेहि अवसरधावा, कौशिल्या सों बचन सुनावा।
जो मणि सम प्रकाश के शीशा, राजकुमार राम करि ईसा ॥
चांदी गोलन सों बरजोरे। निजकर कंज चलाय कै फोरे ॥
यह सुनि कौशिल्या महरानी, निज गल हार दास दै मानी

अरु नृप दशरथ सों कहि नीके आज्ञा करवाई विधि ठीके
खोलि खजाना देहु आज सब, सकललुटावहुँरुकहुनजनअब
रघुनन्दन यह आज उछाहू। कीन न धन राखहु अब काहू॥
यह कहि सब धन दीन लुटाई. दम्पति हर्ष न हृदय अमाई॥
जब रघुबर देख्यो यह हाला, जननी जनक हर्ष धन माला।
दीन लुटाय खजाना रीते। भये सकल तब लख्यो पिरीते॥
भये कोश पूरण सब आशू। राम दृष्टि परि कहँ न सुपासू।
वही राम जू निज उतसाहू। प्रतिदिन धन लुटवत सब काहू
अरु पुनि भरत रहत नित सोई। हम सो भूप काम नहिं कोई
यह सुनि भूप चूप रहि गयऊ, दारोगा सों पूछत भयऊ॥
आजु खर्च दुपहर लग केता। भयहु दरोगा कहहु सचेता॥
साढ़े बासठ मुद्रा केरो। तब लग खर्च देखिहेन मेरो॥
कह चित सों हमका कोउ नाहीं, खर्च थांभिसकिहैयकजाहीं
पर हम सब लोगन की द्वारा। जो कछु धनकर होत सहारा
तौ भल होत बात यह भूपा। निज मन माहिं रहे अनुरूपा
जब लक्ष्मण पुर सैं महराजा। गवरनर जनरल आय विराजा
कीन सभाजामैं सब भूपा। अवध मण्डली के शुभ रूपा॥
भे यकत्र अरु भई कुमेटी। कसि तब मानसिंह नृप फेंटी॥
एक पत्र पर सहस पचीसा। लिखवायो मुद्रा जस हींसा॥
महाराज हित वार्षिक दैना। सबन महीपन के मन चैना॥
अरु छा सहस केर एक ग्रामा, आपु दीनकरिभलिविधिसामा

सूर्यकुंड दक्षिण दिशि सोई। ग्राम अहै देखहु नहिं गोई ॥
यह सब लै अर्प्यो महराजहिं, जबसे सब नृपकरिनिजसाजहिं
नियत समय पर निजनिज मुद्रा, पठवत हैं न करहिंमनक्षुद्रा
यह तजि रीवां जयपुर वेतिया, आदि बहुत हैंजोरजधनिया
यही भांति वार्षिक बहु आवत जेहिलखि कै सबलोगसिहावत
यह आमदि देखत बहु लागै. महाराज ढिग है मनु शागै।
जो प्रतिदिन आवत इमि भाई, दूजे दिन नहिं परत लखाई
अरु महराज नियम हूँ येहू। जो आवै देवहु न धरेहू ॥
जब सब याचक होत अयाची, तब फलहार करत मन राची
यहि कारण जब परेहु अकालू। सत्ताइस उपवास करालू ॥
दैव योग से भे महराजहिं। रहे पढ़ावत छात्र समाजहिं ॥
अरु शत सहसन मुद्रा दीन्हीं, चित्त विकलता तनुक न कीन्हीं
मानुष भाव होत जो काऊ। किमि सन्तुष्ट रहत चित चाऊ
जब इक्कीस बीत दिन जाहीं, करत उपास कबहुँ नर काहीं।
फूटत आंखि जान सब काहू। बहुत कहे नहि है कछु लाहू
अरु जो धर्म प्रशंसा राशी। महाराज मैं होत प्रकाशी ॥
नहिं गिनती तिनकी करि शकई, चहै यत्न कोटिन नर करई
कहने वाला एकरीति से। कहत भली विधि चित्त प्रीति से।
पर जो उपमा रहित लखाई। तेहि किमि कहै बुद्धि कहँ पाई
या सों तुच्छ जीव मैं भाई। कहि न सकत जगगुरु प्रभुताई।
जिमि कछु समुझिपरातिमिभाषा,गुरुयशकहनकेरिअभिलाषा

❀ दोहा ❀

श्रीदिग्विजय सिंह पति जिमि आयहु साकेत ।
नव मन्दिर रचवाय किय, श्रीमहाराज निकेत ॥
वर्णत मैं अब सो सुनहु, दैकै श्रवण सुजान ।
जानत हौ बलरामपुर नृप जेहि भांति महान ॥

❀ चौपाई ❀

जब श्री महाराज सावेता । अचल वास कीन्हेउ जग हेता ॥
वँगला वेगम साहब केरो । जो तिन बागहिं माहिं बनेरो ॥
प्रथम तहैं उतरे बहु काला । रहे जनन को करत निहाला ।
पाठन पठन बहुत दिनताईं, होत रहेउ तेहि मन्दिर माहीं ॥
राजा बाबू आदि घनेरे । आवत दर्शन हेतु बड़ेरे ।
एक समय महराजधिराजा । भूप शिरोमणि सब गुणभ्राजा
श्री बलराम पुराधिप आपू । श्रीदिग्विजय सिंह गत पापू ॥
अवधहिं आयहु सहित समाजा, रामनवमि महँकरिसबसाजा
दर्श पर्श सब करत विशेषी, महाराज ढिग गे गुण पेखी ॥
दर्शन कीन जन्म फल पावा, नृपति तहां बहुविधिचितलावा
उहां बहुत विधि बात मनोहर, होत रहत जो मनुजहि नोहर
सुनि प्रसन्न भे भूप शिरोमणि, करि प्रणामगमनेसबशुभमणि
चले जात मग मन्त्री लोगा । बोले मुनिय महीप सुयोगा ॥
सब राजा लोगन के मन्दिर, हरिमन्दिर शिवसदन सुचन्दिर
बनै इहां यक आपहु केरा बनै विष्णु गृह सुयश घनेरा ॥

यह सुनि कह नृप यक बनवावैं, की दश बीस लाख सजवावैं
सुनि इमि वचन महीपति केरे। चुप ह्वै रहे सकल हिय हेरे
जाना नृप के मन नहिं माना। जो हम लोगन कीन बखाना
व्यङ्ग वचन भाख्यो महिपाला, निजनिजमनगुनिभयेविहाला
नृप कह तुम उत्तर किन देहू। पूछत हैं हम सच मुच येहू॥
एकै बनवावैं वा ढेरे। दश बिश लाख कि और घनेरे।
उत्तर देहु सकल जन ढीठे। सुनि मम बचन होहु जनि मीठे
बोले सब सुनि ये महराजा। बचन गँभीर आपकर भ्राजा।
यहि कर आशय नहिं हम लोगा, समझतकोटिनकरतनियोगा
सरल बचन कहिये करि नेहा। उतर देव नहिं कछु सन्देहा।
तब नृप कहेउ ब्रह्मवैवर्ता। जो पुराण वरहै अघहर्ता॥
तामैं महादेव जो भाषा। द्वय अशलोक उमा करि साखा॥
तिनकर अर्थ सुनो चितलाई। सुनि चितमाहिं लेहु ठहराई॥
जो कोई मन्दिर बनवाई। विप्रहि थापत नेह बढ़ाई॥
एक लाख हरि मन्दिर ओहू। दश सहस्र शिव सदन सुशोहू
मनहुं दीन बनवाय सो प्रानी। यह मम वच सुनुउमासयानी
थापे विप्र प्रसन्न वहूता। परमातमा होत अति पूता॥
परमात्मा प्रसन्न जब होई। तब मैं शिव प्रसन्न नहिं गोई॥
जब प्रसन्न मैं होत भवानी। सब चर अचर प्रसन्नै जानी॥
यह सुनि धन्यबाद सब कीन्हे, महाराज सुनि अतिसुखचीन्हे
कीन अरम्भ तेही क्षण राजा। मन्दिर बनन लाग युत साजा

अष्टादश सहस्र मैं नीको मन्दिर बन्यो सकल विधिठीको
तब विधि पूर्वक श्रीमहिपाला । पण्डित राज कृपालु दयाला
गुरुनारायण तहँ अस्थापा । प्रथम बुधन जहँ वेद अलापा ॥
साठि अधिक शत त्रय प्रतिमासा, मुद्रा पठै देत गुरु पासा ॥
अरु रघुनाथ नाम शुभ गायक । जासु गान सब देश सुहायक
सौंपि दीन गुरु कहँ धरणीशा । अरु कहँ ले महराज अशीसा
सेय चरण जलजात स्वजननू । करहु सफलगुणगणकरुमननू
तेहि श्रीमहाराज दिय आयसु, कनकभवनमहँनितचलिगायसु
श्रीरघुनाथहि गान सुनाई । आवहु इहां न कछु दुचिताई ॥
नये घाट पर मन्दिर सोई । विद्यमान है नहिं कछु गोई ॥
जामैं श्रीमहराज विराजत । पाठ सदन पुनि बुध जहँ गाजत
तदनन्तर भिनगा की रानी, मन्दिर एक रचायहु आनी ॥
यह तेहि सदन दखिनदिशिमाहीं,तेहि लागतिकरहैशकनाहीं
या मैं श्रीगुरु सदन विहारी । ठाकुर विहरत शर धनु धारी ॥
जेहि वँगला मैं प्रथम निवासू । रहत रहै तेहि निकट विलासू
सुरसरि नृपति खजाञ्ची मन्दिर बनवायो यकसबविधिसुन्दर
अति विचित्र रचना तेहि केरी । सभा प्रभा जेहि माहिं घनेरी
लघु लघु मन्दिर बहुत तहांहीं । कहँ लगु कहौं गुनौं मनमाहीं

❀ दोहा ❀

जेहि विधि श्रीमहराज दिय रंगराज पति काहिं ।
श्रीमहन्त पदवी सोई कहत गुनौं मन माहिं ॥

❀ चौपाई ❀

उनइस सै ग्यारह के सम्बत । अवधपुरी मैं विप्रन सम्मत ॥
अरु बावन महन्त बड़ नामी, तिन सम्मति सों ममगुरुस्वामी
नित मध्यम भ्राता विद्यापति, तिनके ज्येष्ठतनयअतिवरमति
रङ्गराज पति जीव तिवारी । जो सब भांति कुशल अधिकारी
राज्य योगसब गुण जेहि माहीं । तेहिमहन्तकीन्हेउनिजपाहीं
अरु जे वेद त्रयी अधिकारी, तिन विप्रन पढ़ि मन्त्र करारी ॥
कीनभूप अभिषेकभलीविधि,अरुसबमिलिउपनामदीन्हसिधि
तब से बहुत भार गुरु केरे । लीन महन्त उठाय बड़ेरे ॥

❀ दोहा ❀

स्वति श्री शीमन्त श्री महा महा महराज ।
श्रीमच्चक्र प्रवर्त सुत दिनकरभासम भ्राज ॥
श्रीमद्रामक चन्द्रगुरु मित्र सभा सदुपेन्द्र ।
श्रीपंडित रँगराज्यपति श्रीत्रिपाठिजी भेन्द्र ॥

❀ चौपाई ❀

वहि राज्याभिषेक महँ जा विधि, पूजनयुतविधानभोसोसिधि
अरु जो दान दक्षिणा दीना । लिखाजायकिमिसकलप्रवीना
श्रीमहराज केर सब कामा । अद्भुत होत सदा सुठि सामा ॥
श्रीमद्रङ्गराज पति तब से हैं महन्त पदवी पर ढब से ॥
यहि अभिषेक केर विस्तारा, क्षेमकरण बुध सहित विचारा ।
श्रीगुरु कथा ग्रन्थ महँ लीखा, लखहिं सुजन चाहैं जो दीखा

❀ दोहा ❀

एक महात्मा दक्षिण से निकट आय महराज।
यक भाषा चौपाइ कर नव दिन अर्थ ससाज॥

❀ चौपाई ❀

एक समय दक्षिण सों एका। अति प्रसिद्ध वैष्णव सविवेका
आए अवधहि दर्शन हेतू। करि सनान सो भये सचेतू॥
सकल महन्त अखाड़न माहीं, दर्शत पर्शत गये तहांहीं॥
जहँ श्रीपण्डित राज विराजे। तहँउ दर्श करि सहित समाजे
अति विनीत ह्वै उठि करजोरी, कह महराज भिलाषा मोरी
है यक पै न कहत बनि आवै, आज्ञा होय तौ दास सुनावै।
श्रीमहराज कहेउ का कहहू। बैठहु सुख पूर्वक बुध अहऊ॥
जो कछु कहन चहौ मुख सेती, कहहु महात्मा जीव सचेती
यह कहि सम्मुख लीन विठाई। कहेउ महात्मा जीव ढिठाई
महाराज मैं अति चिरकाला। महि पर्यटन करत गत जाला
पण्डित और महात्मन पाहीं। पूछत आवत हौं सब काहीं॥
तुलसीदास सुकवि चौपाई। भाषा प्रश्न कीन सब ठांई॥
पर न यथेष्ट तृप्ति भै मोरी। वह चौपाई यहै अधोरी॥
वन्दौं राम नाम रघुवर के। हेतु कृशानु भानु हिमकर के॥
सुनि हर्षित ह्वै श्रीमहराजू। बोले तेहि सराहि करि साजू॥
अये महात्मा जीव गुसाईं। यह चौपाई माहिं बनाई॥
राम नाम को कीन बन्दना। जेहि विस्तार चारि श्रुति भना

अरु छा शास्त्र पुराण अष्टदश, वर्णत लहत न पार कहैं कस
पर कछु तव प्रसन्नता हेतू। कहत सुनौ समुझौ करि चेतू॥
यह कहि तेहि चौपाई केरे। नव दिन लगु कह अर्थ घनेरे॥
सुनत महात्मा जीष अघाने। दशयें दिन इमि कीन बखाने
महाराज तव कृपा कटाक्षू। अति कृत कृत्य कीन मोहिंआछू
पर यह शोच बड़ो मन माहीं, मम मतिमन्द गहत कछुनाहीं
या कर कछु भावार्थ नतेही। याद रहिहि दूषण वड़ येही॥
कछुक लिखी पढ़ि व्याख्या ताकी, कहँलगलिखैंरहीसबबाकी
गयहु चले निज देश बखानत, ममगुरुसुयशसुमतिअनुमानत

❀ दोहा ❀

पण्डित राधाकृष्ण पौराणिक हरि के हेतु।
जिमि सत्ताइस अर्थ सित कृष्ण शब्द कहि देत॥
वर्णत सो सुनियो सकल पण्डित राज सचेत।
श्रीमहराज कृपा यतन करत मदै पर हेत॥

❀ चौपाई ❀

पंडित राधाकृष्ण पुरानिक। हते प्रसिद्ध शास्त्र मणि खानिक
जिनके तुलाराम शिषि भारी, भागवती प्रसिद्ध अधिकारी॥
जिन सम कथा न बांची काहू, सुनि चहै बुधमाखैं मनमाहू॥
वै श्री राधा कृष्ण प्रवीना। महाराज ढिग गे लवलीना॥
अरु श्रीमद्भागवतहि केरे। दूजौ स्कन्धाध्याय सतेरे॥
कृष्णचन्द्र अवतार कथा मैं। पद सित कृष्ण लिखाअतिवामैं

तेहि पढ़ि कह महराज कीन मैं। अर्थ नवक याके प्रवीन मैं
असकहि सब सुनाय इमि भाषा। महाराज अबयहअभिलाषा
आपहु निज मुखसों कछुकहिये,व्याख्यासुनिजासोंसुखलहिये
कह महराज बहुतही अच्छा, सुनहु विप्र करिके चित स्वच्छा
अर्थ सत्ताइस तुरतै कीना। सुनि सो बुध भो आनन्द लीना
अरु कह जो मम ढिग लखमुद्रा,होत निछावरि करत न चुद्रा

❀ दोहा ❀

पण्डित जिवराखन बहुरि, गङ्गाधर जिमि दोय।
महाराज ढिग रहि पढ़्यो, विद्या वर्णत सोय॥

❀ चौपाई ❀

जिवराखन त्रिपाठि गङ्गाधर। शास्त्री दोय अतीव बुद्धिवर
ग्राम लसोढ़ा बौंड़ी पासा। बहराइच प्रदेश में बासा॥
वैयाकरण रूप द्वउ पण्डित, प्रथम पढ़े निज देश अखण्डित
पुनि काशी नदिया शान्तीपुर, पढ़े अनेकन ग्रन्थ मुदित उर
मीमांसा व्याकरण न्याय सब,पढ़ि पढ़ि गुरुन सों विदाभयेतब
कीन विचार मार्ग मैं दोई। वीश वर्ष हम पढ़े न गोई॥
शास्त्रार्थहु जहँ तहँ वहु कीना जितवो कीन बुधन परवीना
अरु है अवध सुदेश हमारा। संस्कृत बोलि त्रिपाठिसौप्यारा
तब चलिये निज सदनहिं दोऊ, इमिकहिअवधहिआये सोऊ
महाराज दर्शन करि नीके। बैठि गये कछु कहा न जी के॥
महाराज संस्कृत मैं पूँछा। कहँ तुम सदन कहा नहिं कूछा।

पुनि कह महाराज यह बानी, बोलत कस न बुधहु बड़ जानी
तब बोले दोऊ महराजा। तुम ईश्वर हौ सब गुण भ्राजा॥
तुम्हरे सम्मुख सत्य बखाना। करन चही सो करत न आना
हती हमन की यह अभिलाषा, निजपांडित्यकहवनिजभाषा
पूँछेहु कुशल प्रश्न जो आपू। तासु एक पद सुनि हिय कांपू
शोचत सकल भांति पर नाहीं, मति पहुँची तहँ लगु को काहीं
अब हम निज पण्डिताई आपहिं, काह जनावैंमनमत जापहिं
अबलगि रहि परदेश स्वजननू। वृथा गँवाये करत स्वमननू
अस मन होत सरयु महँ डूबी। अब घर जाय लहव का खूबी
कह महराज बुधन को ऐसा। कहन न चाहि कहत हौ जैसा
पुनि निज शब्द अर्थ करिदीना, जेहिं सुनि प्रथमभ्रमेपरवीना
अरु कह जो विद्या तुम लोगा, पढ़ेहु ताहि तजिकै सब शोगा
यक यक ग्रन्थ सबनकर हमसे, पढ़िकै साफ करहु शुभ ढव से
तो सब शास्त्र भरम मिटिजाई, यह सुनि उन सोइ कीन उपाई
जासो नाम सुयश उन केरा। पण्डिताई में भयहु घनेरा॥
वैल राज्य में ग्राम महेवा। गङ्गाधर तहँ रह बुध देवा॥
जिवराखन स्वर्गी ह्वै गयऊ, अब नहिं गङ्गाधर वउ मरयऊ
पर महराज कृपा सों दोऊ। इमि बुध भये बोलु नहिं कोऊ
बहुत दिननलगुबुधजिवराखन,लक्ष्मणपुरमहँकियसुखलाखन
वकसी टिपुरचन्द के पासा। रहिकियबुधनसों बागविलासा
जीतो सभा अनेकन तेई। हारे कबहुँ न बड़ बुध सेई॥

मञ्जूषा महराज पढ़ाई । अष्टादश सहस्र अति भाई ॥
सो कण्ठाग्र सदा तेहि रहई । नित्य पाठ ताकर कछु करई ॥
बहु को कहै मरत हूं वारा । सब सन कहि इमि बात उचारा
भाइउ मञ्जूषा मम छाती । देहु लगाय न आन पोसाती ॥
अरु प्राणान्त भयहु पर मोरे । देहु सङ्ग तेहि दह्यहु निहोरे ॥
मञ्जूषा वियोग दुःख मोहीं । जासों होय न विनवों तोहीं ॥
वैसे कीन चिता पर सोई । धरि किय भस्म तनिक नहि गोई
गङ्गाधरहु अनेक सभा मैं । यश पायहु शंका नहिं यामैं ॥

❀ दोहा ❀

खण्डन व्याख्येन्दिराधर मैं जिमि भट्ट फतूरि ।
भयहु निरुत्तर सो कहत सुनियो करि भ्रम दूरि ॥

❀ चौपाई ❀

परिभाषेन्दु शेषरी टीका । व्याख्येन्दिराधर सु अति ठीका ॥
महाराज ने रची अनूपा । जेहि लखि होत बहुत बुध चूपा ॥
तापर भट्ट जनकपुर वासी । नाम फतूरी बुद्धि प्रकाशी ॥
वैयाकरण रूप किय खण्डन । जान्यों अब न होय गो मंडन
अरु ममसुयशसकलविधिहोइहि,बुधजनकबहुँकतहुँनहिंगोइहि
यह विचारि सो अवध पठावा, जस गुरुलोचन गोचर आवा
तैसहि वर्णधार व्याख्याना । रचि विदेह पुर पठव महाना
जामैं भट्ट फतूरी डूबे । छव्वे होन गये भे दूबे ॥
नहिं उतरान आज लग सोई । उत्तर देहिं कवन विधि ओई

अरु ता खण्डन मैं महराजा, प्रथम पद्य जो लिखेहु ससाजा
तासु अर्थ यह है सुनि लीजै, सुनि निजमनगुनिजयजयकीजै
जो पर्वत उखरैया पाहीं। नहीं पुष्प उखरावत आहीं ॥
तिन्हैं काह कहना जग चाही। मतलब तासु केर यह आही
इहाँ शेष कृत भाष्यहु केरे। खंडन मंडन होत घनेरे ॥
तो फतूरि कृत खंडन करना। कौन कठिन कारजवर बरना
भई फतूरि बात तिमि भाई। जिमि मोहित ह्वै कै कोउ जाई
पर्वत पुञ्ज उखारन हारै। ढिग जावै इमि बात उचारै ॥
धरती फूल उखारहु आई। तनिक सहारहि मैं जो टुटाई ॥
इमि भाषे ताकी अति भूला, अरु मूर्खता विदित अनुकूला
होत बहुत जन जग मैं ऐसे, फिरि फतूरि किमिलिखै न वैसे

❀ दोहा ❀

खंडन श्रीभागवत पर समाधान करि दीन।
सुरसरि नृप अभिलाष सो सो अब कहत प्रवीन ॥

❀ चौपाई ❀

विष्णु प्रकाशसिंह सुरसरिके, महाराज सब गुणगण भरिके
द्वादश शत मुद्रा प्रति वर्षू। देत महाराजहिं युत हर्षू ॥
तिन गुरु गोरख क्षेत्र निवासी, विद्यारण्य नाम सन्यासी ॥
कह भूपति सों देवि भागवत, अष्टादश पुराण महँ आवत
विष्णु भागवत तिन से बाहिर, वोपदेव कृत है यह जाहिर
व्यास रचित नहिं निस्सन्देहू, सुनि कह नृप प्रमाणकस येहू

सुनि सन्यासी मति अनुसारा, खर्रा एक रचेहु श्रुति न्यारा
देवी भागवत स्थिति नामू। लिखि पठवा श्रीकाशी धामू ॥
अरु तिरहुति नदिया शान्तीपुर, भेजा उहहुँ भईकर लिपिकुर
परतिन मत अवलम्बिन कीनी, करलिपिसकलबुधननहिंदीनी
तब भूपति कह प्रज्ञ शिरोमणि, श्रीत्रिपाठिजबदेखिदेहिभणि
तब प्रमाण होवे तेहि केरो, यह विचारि किय अवधहि फेरो
लै खर्रा भूपाल लखावा। श्रीमहराजहिं बना बनावा ॥
निज मन शोचि कि जो महराजू, सम्मत देहिं प्रचारोंआजू
देखत ही कह श्रीमहराजा, सुनहु नृपति परिहरि सब लाजा
विष्णु भागवत वेद ब्यासा, रचिकै कीन लोक परकाशा ॥
जो साक्षात् कृष्ण अवतारा, कीन ग्रन्थ यह सहित विचारा
अष्टादश पुराण मैं याकी। निश्चय गणना बुधगण आँकी
अरु तव गुरु जो निन्द्यो व्यासू। तुम सुनिकैकीन्हेउ परकासू
यहि अपराध केरि नहिं थाही, हम तब बदनलखननहिंचाही
अस अधर्म मत पै नहिं सम्मति, देन चही सुनिलेहुमहीपति
खन्डन करि चाही कछु काजा, करन सत्य कहते हम राजा
ताही समय तासु किय खंडन, पुनि कोइसकैन करितेहिमंडन
नीचे लिखत नाम तेहि केरो, लखहिंसुजननिजमन करि हेरो

❀ अनुष्टुप छन्द ❀

श्रीमद्भागवत द्रोह दम्भ भूधर भेदक।
दम्भोलि कहिये नाम पाखंडि मत छेदक ॥

❀ दोहा ❀

राजा सन्यासी गृहाश्रमी कौन अस आय ।
जो वह खन्डन देखिकै हर्षित हो न बनाय ॥

❀ चौपाई ❀

तेहि खन्डन मैं यक पद केरो । है यह अर्थ सुनौ हिय हेरो
वोपदेव जो ग्रन्थ बनाये तिनकी गणना लिखी सुहाये
तामें लिखा कि ग्रन्थ तीनि मैं, रच्यो भागवत पर प्रवीन मैं
परमहँस प्रिय यक अरु दूजा, हरि लीला अस नाम सुपूजा
तिसर भागवत मुक्ताफल अस, नामकरयोनहिंभन्योआनवस
यदि यह श्रीभागवतहु तासू। होत रचो तौ करत प्रकाशू ॥
लिख्यो जहाँ त्रय ग्रन्थ तहांसो, लिखत चारिसन्देहकहा सो
दूजे तीनि ग्रन्थ मैं आपन । वोपदेव किय नाम सुथापन ॥
यामैंकिमिलिखिदीनव्यासकर,नामननिजलिखिदीनखासकर
जो कोइ निज कविताई माहीं, नाम आनकर लिखत बनाहीं
तौ धन लोभहि सो लिखिदेई, जिमि विद्या अरण्य कवि खेई
वेद भाष्य रचि माधव केरो, लिख्यो नाम ह्वै कै जिमि चेरो
अरु शत बुध मिलि माधवनावा, माध साहकर नामलिखावा
वेद व्यास माहिं यह बाता । कौनिउ भांति युक्तनहिं ताता
क्योंकि व्यास कर कौनप्रयोजन, जो किसहस द्वैसहसदेयधन
वोपदेव सों करत निहोरी । नाम लिखावत आपन चोरी ॥
इहि तजि वोपदेव अरु व्यासू । एक सङ्ग नहिं हते खुलासू

अरु जो कहहु कि श्रीभागवतू। सब पुराणसमनहिंलखिअवतू
अन्य पुराण सहज सब अहईं, श्रीभागवत कठिन सब कहईं
यासों विदित होत की व्यासा, कीन न श्रीभागवत प्रकाशा
तौ यह कथन बनाय अयोगू। लखहु शंकराचार्य अयोगू॥
षोडश भाष्य रचे तिन भारी। शारीरक जो भाष्य करारी॥
ता सम कठिन न एकौ अहई। मन लगाय देखहु का कहई
जो कहिये कि शंकराचारज। रच्यो नहीं यह भाष्यतोअचरज
अवशि शंकराचार्यहि केरी। शारीरकहु भाष्य हम टेरी॥
याही विधि श्रीमद्भागवतू। व्यास रचित है चुपरहु अवतू।
जो यह सबसे अधिकविलक्षण, ताकरकारण सुनहिंविचक्षण
रचत रचत इतिहास पुराना। अति निर्मल व्युत्पत्ति बखाना
मरम प्रेम सो सबके पीछे। रचेहु ग्रन्थ यह मति करि तीछे
या सो सबसे अधिक विलक्षण, अरु उत्तमयहगुनहिंविचक्षण

❀ दोहा ❀

जेहि विधि रामाधीनसिंह, श्रीमहराज समीप।
भूले निज पांडित्यकी कहत सो सुनु कुलदीप॥

❀ चौपाई ❀

राज राज दर्शनसिंह केरे। जो सब भांति प्रताप बड़ेरे॥
रामाधीनसिंह सुत जेठे। पण्डित राजत मति के हेठे॥
जो शिव भक्त अनन्य प्रसिद्धा, लै दश बीस सचिव युव वृद्धा
श्रीमहराज दर्श के हेतू। आये सो करि बैठि सुचेतू॥

कुशल प्रश्न पूँछा महराजू। तब नृप सुत बोलेहु करि साजू
महाराज जो गीता माहीं। सर्व धर्म तजि भजन कहाहीं ॥
तव सम्मुख ताके शत अर्थू। कहव न रुकव कहत नहिं व्यर्थू
अरु ताही पर आपहु केरी। होउ पराजय तनिक न देरी ॥
यह अविचार सहित सुनि बानी, महाराज बहु हँसे बखानी
जासों पुत्र भाव महराजू। रामाधीन आदि महँ साजू ॥
रामाधीनसिंह सुनि लेऊ। भारत मैं यह लिखा अहेऊ ॥
की सबसे जीतन की इच्छा, राखन चही शास्त्र यह शिक्षा ॥
पर सुत सों हारन की कांक्षा। सदा चही नहिं जयकी वाञ्छा
या सों जो तुम्हरे कर पाहीं। होय पराजय मोरि भलाहीं ॥
आन काहु के हाथहु कबहूं। होंय पराजय क्षिति महँसबहूँ।
जासों हम पै पिता तुम्हारे। भाय भाव राखत थे प्यारे ॥
अरु हम तुम मैं पुत्र भाव नित, राखत शोच नहीं हमरे चित
पर तजि अर्थ निनानव एकू। शुद्ध अर्थ कहु मम ढिग नेकू
यह कहि यह शलोक गुरुभाषा, जासु अर्थ है यहअतिचाखा
रावण अरु दुर्योधन दोई। मानी प्रथम भये नहिं गोई ॥
तीजे रामाधीन न शङ्का। होन हार चौथो नहिं बङ्का ॥
बड़े शोच की है यह बाता। कहत लोग जो जिन्हैं सुहाता
यह सुनि रामाधीन नरेशू। अति लज्जित भे विनय करेसू ॥
क्षमा कराय सकल अपराधू, गे निज भवन रहित सब बाधू

❀ दोहा ❀

सखा भाव रघुनाथ मैं उत्तम है सब भांति।
सखी भाव सों सो कहत सुनहुं सकल बुध पांति॥

❀ चौपाई ❀

चित्रकूट महँ एक महाना। श्रीभिक्षुकाचार्य्य परधाना॥
परमहँस निवसत थे नीके। सखी भाव रघुपति मैं ठीके॥
योषित आपहिं रामहिं स्वामी, समुझि रहत पूजा अनुगामी
अरु जो अवध माहिं कैकेई। मन्दिर सुभग बनो श्रुति गेयी
कनक भवन अब जेहिं कहैं लोगू। जोनहिंममतिवर्णनयोगू
तहँ श्रीवासुदेव शुभ नामा। परमहँस रहैं सब गुण धामा॥
उन्हैं राम जी मैं सुख राशी, सखा भाव रहि वेद प्रकाशी।
एक समय श्रीचित्रकूट के। परमहँस वर क्षिति त्रिखूँट के॥
निज भावना पत्र मैं लेखी। आवध परमहँस ढिग पेखी॥
तापर परमहँस इन लीखा। निज भावना जोभलिविधिशीषा
चित्रकूट के परमहँस तब। इन भावना कीन खण्डन सब॥
श्रीमहराज निकट सो पेरी। निर्णय होन हेतु चित हेरी॥
दोनौ खण्डन लखि महराजू, नव खण्डन यक रच्योसुसाजू
सख्य सरोज भास्कर नामू। चारि सहस सुश्लोक सुसामू॥
निर्णय कीन सकल विधि तासू, भक्ति विवेक केर जहँ वासू
जिमि ता मैं वर्णन तिमि नाहीं, कोउ आचार्य कीनमहिमाहीं

यह सिद्धान्त ग्रन्थ कर आई, सखा भाव उत्तम श्रुति गाई ॥
जासों आठ पहर सुख पाई। सखी भाव यक क्षण सुखदाई

❀ दोहा ❀

कृष्ण शास्त्रि श्रीराम मैं कृष्ण चन्द्र सम्बन्ध।
कछु कहि उत्तर रहित भे सुनियो सोइ प्रबन्ध ॥
रामनगर के राज्य मैं, यक गणेशपुर ग्राम।
वाघर गण्डकि सन्धि पर बसत बहुत अभिराम ॥

❀ चौपाई ❀

तहँ सरयू प्रसाद तिर वेदी। राम भक्त बसैं सब अघभेदी ॥
जिन कह भक्ति भाव के कारण, मिलीमहन्तपदविभयदारण
ये हैं श्रीरघुनाथ उपासक। राखत आन केरि नहिं आशक ॥
अरु द्वारकाप्रसाद अवस्ती. कृष्णोपास्य बसैं तेहि बस्ती ॥
अन्य उपासक देखि करारी. करत दूसरो छेड़ा छारी ॥
यद्यपि यह सब भांति भदेसू। पर न करत कछु करत अँदेसू
यक दिन श्रीद्वारका प्रसादू। कह महन्त सन सहित विवाहू
नग्न जीत कौशलपति गेहा। व्याहे कृष्णचन्द्र न सँदेहा ॥
यासों श्रीरघुनाथ तुमारे। कृष्ण चन्द्र के लागत सारे ॥
यह सुनि कै महन्त लिखिचीठी, महाराज ढिग पठयहु दीठी
महाराज उत्तर लिखि दीना। नग्नजीत नृप अवध पतीना।
सूर्यवंश महँ तासु न जननू। देखहिं बुधगण करिकै मननू ॥
जो कौशला विन्ध्य गिरिदक्षिण, भूप तहांकर वह नृपरक्षिण

श्रीद्वारका प्रसाद कहानी। यासों वृथा सकल जग जानी
हां श्रीकृष्ण रामजी केरे। अलबति श्वसुर लगत बुध हेरे॥
जासों सत्यभामा वसुधाशा, अरु सीतामहि सुता खुलासा॥
कृष्ण बधूटी हैं सत्य भामा। सीता रामचन्द्र की बामा॥
यह सरयू प्रसाद लै चीठी। किय द्वारका प्रसाद कि दीठी॥
करि द्वारकाप्रसाद एक प्रति, भेजेहु कृष्ण शास्त्रि पहँ युतपति
धीर समीर घाट वृन्दाबन। बसत सो शास्त्री जानहु सबजन
उत्तर शास्त्री जी जो दीना। नीचे लिखत सो लखहिंप्रवीना
जो जो दीन उतर शास्त्री तिन, सो सो प्रश्न रहे दल काठिन
जो त्रिपाठि जू ने लिखिदीना, नहिं संशय कछु सुनहुप्रवीना
प्रणवौं कृष्णचन्द्र गोपाला, जिन गोपी दधि सों तन पाला
शिकहर सों उतारि ओखरि पर, बैठिभलीविधिखांयहाथधर
लखि यशुमति भययुत ह्वै भागे, हरहिं कृष्णसोममभय आगे

❀ दोहा ❀

द्विज सरयू परसाद अरु द्विज द्वारका प्रसाद।
इन मिलि कै जो कीन है उत्तम बाद विबाद॥

❀ चौपाई ❀

तामैं बुधवर श्रीमदुमापति। रामचन्द्र वर मित्र महामति॥
धीश सभापति परम सनेहू। पत्र न लिख्यो विचारि कहेहू
यासों कृष्णशास्त्र मैं नीके। उत्तर तासु लिखत विधि ठीके
लिखा पत्र मैं जो श्रीतिवारी। कोटिन पुरुष भये पर भारी

रामचन्द्र पीछे सुनग्नजित। भयहु सो नहिं यह बात अहैमित
जासों रामचन्द्र सुत कुशहू, कुश के अतिथि अतिथिसुनिषधहू
निषध के नभ नभ के पुंडरीका, पुंडरीकसुत सब विधि ठीका
क्षेमधन्वा तिनके देवानिक, पिता अही नगु के तेहि जानिक
पारजात तिनके तिनके बल, बलके स्थल तिन बज्रनाभभल
तिनके स्वगण विधृतितिनकेरे, तासु हिरण्य नाभ मति डेरे
तासु पुष्य तिनके ध्रुव सन्धी, तासु सुदर्शन सुत सम्बन्धी
तिनके अग्निवर्ण तिन केरे। शीघ्र शीघ्र के मरु मरु केरे॥
पुत्र प्रंसुश्रुत सन्धि ताहि के, तिनके अघमर्षण निवाहि के।
महस्वान ता सुत तिन पूता, विश्व साह्व अस नाम पुनीता
तिनके सुत प्रसेन जित नामा, सकल भांति सों पूरण कामा
राम छवीसी पुस्ति भयो यह, नाम नग्नजित यहि दूसर कह

❀ दोहा ❀

उग्रसेन कर नाम जिमि, शूर सेन है दूज।
तिमि प्रसेन जितनग्न जित दोऊ नाम सुपूज॥

❀ चौपाई ❀

अरु जो लिखा नग्न जित भूपा, अवधपुरी कर नहिंअनुरूपा
सो वह अवधहि केर भुआला, श्रीधरस्वामिलिख्योतेहिहाला
का यह भूप अयोध्यहि केरो, जिन निज सुता कृष्णवर हेरो
कहा कृष्ण सों मैं निजतनया, पति तुमहीं को मानत सदया
यहि लेखन सों मतलब एहू, है कि मदीय वंश्य नहिं केहू॥

तक्षक बृहद्बलादिक मानत। जो दुर्योधन सङ्गी भानत ॥
याही सों अर्जुन रण माहीं, मारा बृहद्बलहिं शक नाहीं ॥
नग्न जीत पोता यह आई। जासु बृहद्बल नाम बताई ॥
अरु जो लिखा कि दिनकर वंशी, कन्या देतन कबहुँप्रशंसी।
सोम वंशि भूपन को सोऊ। ठीक नहीं हम सों सुनि जोऊ
सूर्यवंश सुद्युम्न नरेशू ज्वे योषित ह्वै गयहु भदेसू ॥
तब तेहि सोम पुत्र बुधसाथा, भयहु विवाह प्रकट यह गाथा
अरु दिनकर वंशी शर्याती। ताकर रेवत भूपपनाती ॥
ताकी सुता रेवती जोई। श्री बलदेवहिं व्याही सोई ॥
अरु कालिन्दी सूर्य्यकुमारी, व्याही कृष्णहिं बात करारी ॥
अरु सब सखा परस्पर भ्राता, होत सकल जानत यह नाता
अरु जो लिखा कि दिनकर वंशी, गोपाचरणन करत प्रशंसी
यहौ बात नहिं ठीक बखानी, नृप दिलीप की सुनहु कहानी
गो पालक ताकरि रघुनामा। पायहु पुत्रसकलगुणधामा ॥
अरु जो लिखा कि अवधभुआला,गज तुरङ्ग वितरतसबकाला
कबहुँ न बृषभ प्रतिज्ञा करहीं, जिमिकियनग्नजीतनृप वरहीं।
दीन सो नग्न जीत दायजहूँ, कृष्णहिं नव सहस्रवर गजहूं ॥
अरु नवलक्ष दीन रथ नीके, तुरग दीन नव कोटि सुठीके ॥
अरु नव अर्व मनुज सो दीना, जानत हैं बुध लोग प्रवीना
अरु पिछले वंश्यन की कन्या, अगिले बालनहूँ की मन्या
जैसे पौत्र सुता बाबहु की। लड़की मानी जात अबहुँ की ॥

यासों नग्न जीत की कन्या । सत्यारामहु कन्या मन्या ॥
अवध नरेश सुता बहु तेरी । सौ भरिमाथुर व्याही घेरी ॥
वृन्दाबन सों जब यह खंडन, श्रीद्वारका विप्र मन मंडन ।
आयहु तिन दिखरायहु नीके, रामचरण बुध कहँ करि ठीके
अरु सरयू प्रसाद द्विजहू को, दीन लखाय तनिक नहिं चूको
पण्डितजी अवधहि सो चिट्ठी, महाराज ढिग पठयहु ढिट्ठी
महाराज देखत तेहि खण्डा, पुनि न आजु लगु तिनतेहिमंडा
खण्डन मैं मङ्गलाचरण कर. है यह अर्थ सुनहि मतिवर नर
सब सुख अरु मङ्गल के दाता, महानन्द राशिद भय त्राता ।
सब सज्जन समाज सुखदाई, शान्तचित्त दानीश कहाई ॥
मधुर मनोहर मूर्ति हमारे । तन धन मन श्रीराम पियारे ॥
चक्रवर्ति सुत दिन अरुराती, बिघ्न जाल फारैं सब भांती ॥
अविचारी द्वारका प्रसादू । किय श्रुति व्यथा कथा करिवादू
वेद वेद्य मम हृदय निवासी, रामभद्र महँ स्वगुण प्रकाशी
तापर कृष्णशास्त्रि निजनामू । प्रकट्यो गुणकरि बृथाकलामू
काले नाग काक कलियुगको, कृष्ण कहतकविजनसबजगको
लिख्यो अलेख लेख सब जासों, अर्थ घटित भे ये सब तासों
जिमि मातापितुसुतहिखेलावत,अनुचितउचितकहतजोभावत
तिमि मदुक्ति खंडन किय सोऊ, रहेउ न शोचतनिकउरकोऊ
परमन्दर परिमाणु न्याया, प्रकट कीन उन जो इमि गाया
जेहि समुद्र महँ बूड़ेहु मन्दर, कहु परिमाणु काह तेहिअन्दर

रामचन्द्र अवतार अनन्तर, कोटिन पुरुष भये पर नृप वर ॥
भयहु नग्नजित यह खंडनहित, लिखीभागवतकथामुदितचित
की छब्बिस पुरुषन के पीछे । भये नग्नजित नृपति सुतीछे ।
यह उन लेखन विना विचारू, व्योम पुष्प समहै निरधारू ॥
जासो श्रीहरि बंश पुराना । लिखत साफ देखहु धरिध्याना
चौविशिये त्रेता महँ रामा । अवध नृपति दशरथ के धामा
चारि मूर्ति करि प्रकटेहु नीके, पालेहु धर्म सकल विधि ठीके
अरु मार्कण्ड्य पुराण वखानत जाहिसकलबुधसबविधिजानत
अट्ठाइसयें द्वापर माहीं । कृष्ण चन्द्र जनि कछु शक नाहीं
यहि हिसाब सों एक करोरी, लख यकाशि असिसहसबहोरी
वर्ष राम अरु कृष्ण जनन मैं, अन्तर है कछु कहत न बन मैं
चौविशयें त्रेता की सांझा । यक लख आठ सहस जेहिमांझा
भयहु राम अवतार करारी । खल बल दलन साधु हितकारी

❀ दोहा ❀

आठ लाख चौसठि सहस पुनि द्वापर के वर्ष ।
चार लाख बत्तिस सहस कलियुग वर्ष सहर्ष ॥
पचिस छविस सतइस चतुर्युगी वर्ष कर योग ।
एक कोटि उन्तीस लख साठि सहस सब भोग ।
अट्ठाइसयीं त्रियुग मैं द्वापर सन्ध्या हीन ।
अर्तिस लख सोरह सहस भाषत वर्ष प्रवीन ॥

द्वापर की के साँझ मैं कृष्ण चन्द्र अवतार ।
भयो वर्ष सब जोरियो उतने हैं सविचार ॥

❀ चौपाई ❀

अरु इकले द्वापर युग माहीं, मनुज आयु युग वर्ष जो आहीं
तिनकर किये हिसाब छबीसा, पुस्ति न होत कौन करुकीसा
जासों आठ लाख अरु चौंसठि सहस वर्ष द्वापर युग मैं हठि
अरु यक सहस वर्ष की तामैं। नर आयुष शङ्का नहिं यामैं ॥
जो सब पूरो आयुष पावैं। अठ सै चौंसठ पुस्ति वितावैं ॥
केवल द्वापर ही मैं जानूँ। और युगन की किमि गति भानू
छब्बिस पुस्ति हिसावन केहू, भांति होत समझै सब येहू ॥
त्रेता आयुषहू जब लीजै। तबहुँ न छब्बिस पुस्ति कहीजै
कोटि पुरुष अन्तर सौ नीके, समुझि परत सब विधिसोठीके
अरु आयुष की और विचारौ। तौ भारत कर लेख निहारौ
जहँ द्रोणाचार्यहि की आयुष, वर्ष पचासी रही न तहँ सुख
इमि भीष्महुँ की आयुष जानौं, इनसे न्यून युधिष्ठिर मानौं
उनसे कम श्रीकृष्णहु केरी। भई सहस की काहु न हेरी ॥
यहि हिसाब सों कोटिन पूरुष, भये होहिंगे छविस न मूरुष
एक करोरि यकासी लाषा। असी सहस्र वर्ष मैं भाषा ॥
छब्बिस पुस्ति न कौनिउ भांती, होत करोरिन की यह पांती
यासों छब्बिस पुस्ति कहानी। मृषा मृषा सुनि होत गलानी
अरु भागवत केर यह आशय, गनत प्रधान पुरुष असभासय

यह नहिं है कि क्रमहिं सोएते। भये पुरुष वरणा उन जेते।
यासों लिख हरि वंश पुराना। कीन जो हम यह वंशबखाना
सो इक्ष्वाकुवंश मैं जेते। भये प्रसिद्ध कहा हम तेते।
यह नहिं है कि भये इतनोई, जिन जिय तर्क बढ़ावै कोई
त्रेता अन्तराम अवतारा। द्वापरान्त श्रीकृष्ण विचारा॥
यह सर्वत्र लिखा न सदेहू। देखैं सुनैं सकल बुध येहू॥
जा सों जबहिं होत अवतारा। युग सन्ध्यांशहिमाहिं प्रचारा
यासों रामकृष्ण की मूरति। युग सन्ध्यहि मैं भयेसुसूरति
अरु जो कृष्णशास्त्रि लिखि दीना, सूरसेन सम नाम प्रवीना
है दूजो प्रसेन जित नामू। नग्नजीत यह वृथा कलामू॥
जासों मूलरु टीका माहीं। कतहु प्रमाण लिखा यह नाहीं
अरु टीका मूलहु महँ नामा। उग्रसेन के लिखे सुसामा॥
अरु श्रीमद्भागवत पुराना। सूर्यवंश के भूप बखाना॥
पर न नग्नजित की कहुँ चर्चा, कीन खोज देखा करिफर्चा॥
यासों नग्नजीत नृप काऊ। अवध महीपन काह बताऊ॥
अरु जो श्रीधर टीका माहीं, लिखा नग्नजित अवधप आहीं
सो सब भांति भयो भ्रम ताहू। वत पढ़ाव सों नहिं कछु लाहू
अरु सुद्युम्न कथा जो लेखी। वृथा स्वऊ नहिं तनुकविशेषी
जासों शापाक्रान्त महीपति। रही ठीक नहिं कछु ताकीगति
अरु बुध सङ्ग न भयहु विवाहू, ताके पिता दीन नहिंकाहू॥
कन्या रूप न जन्म्योभूपा, कृत्रिम की का बात निरूपा॥

अरु कालिन्दी कथा बृथाहू । पिता दीन नहिं भयहु उछाहू।
अपने आप कृष्ण कर पानी । कालिन्दी पकरा सब जानी
अरु सत्राजितहू की गाथा । बृथा सूर्य हैं जग के नाथा ॥
वै काहू विधि सत्राजित के । ह्वै न शकत भ्राता गुणचित के
अरु जो कहहु भागवत माहीं, लिखासखाकरितिनकहँ आहीं
तो यह लिखा सखा पद जोई । सो विश्वास पात्र हित होई
जिमि वाल्मीकि जीव लिपिकीनी, बालकाण्डमैंबहुतप्रवीनी
को दशरथ नृप कहा बखानी, कौशल्या सों निज हित जानी
तुम मम माय बहिन सखिनाई,अहहु विचारि लेहु न झुठाई
तौ यह काम काम की ताई । है विचार कछु नाहिं सदाई ॥
भोजन समय मातु सम वामा । दवा समय भगिनीसमसामा
सखी समान सदा उपकारे । जानहु या विधि सकल विचारे
ऐसे कथन मात्र सों भानू । सत्राजित कै भाय न जानू ॥
अरु श्रीगरुण रामजी केरे । दासरु वाहन हैं श्रुति टेरे ॥
पर श्रीराम कहा तिनकाहीं, सखा काण्ड लङ्कहि में लिखाहीं
अरु महराज दिलीप कथाहू, वृथा लिखो जो शास्त्र बनाहू
जासों श्रीदिलीप महराजू । सन्तति मिलन हेत सो काजू
अरु गुरु प्रसन्नता के हेतू । पुनि गुरु अज्ञापालि सचेतू ॥
गोपाल न तिन कोनन वेषू । गोपन केर कीन यह लेखू ॥
अरु जों लिखा कि पिछलनकेरी, कन्याअगिलेहुनकिक हेरी
यहौ कथा तब बृथा महीसुर । धर्मशास्त्र नहिं गुनेहु जानिफुर

एक विश पुरुषन के पीछे। सापिण्डता मिटत लिख पीछे
कुल मर्याद नियम यह सबहूँ, भाषत धर्मशास्त्र लखु अबहूँ
यासों कन्या पिछिलन केरी। अगिले वंश्यन की नहिं हेरी
अरु रेवती कथापिबृथाहीं,लिखी शास्त्र की लीन न याहीं ॥
रेवत ब्रह्मलोक जब गयऊ। जब लगु वहँ सों ठहरत भयऊ
तब लगु युग अनेक गे बीतो। सब महि महिप मरे युग रीती
अरु तेहि समय रहे जो पूरुष। सब छोटे तन के सुनु मूरुष ॥
तासु बिवाह तिन्हन के सङ्गा,अति अयोग्य समझेहुमतिरङ्गा
अरु बलदेव जीव जाही सों। हते विष्णु अवतार तेही सों
अरु ताके समदेह भये ते, पुनि विधि अज्ञा शीस धयेते ॥
अरु तेहि समय न भूप रहे ते, भो बिवाह वह इमि सुबहे ते
अरु जो सौभरि केरि कहानी, लिखी वृथा सोउ कहतबखानी
जासों सौभरि गुण के खानी। दान पात्र विप्रोत्तम जानी ॥
अरु मथुरा शत्रुघ्न बसाई। तहँ के बासी सौभरि गाई ॥
यासों निज नगरहिं के तेऊ। आनन हते कतहुँ के केऊ ॥
अरु नृप मानधाता तिन केरे। जानत गुण सब भाँति बड़ेरे
अरु तेहि समय न मथुरा माहीं, रहे सोमवंशी नृप आहीं ॥
यासों सौभरि केर बिबाहू। भयहु अवध पति गेह उछाहू ॥
सत्याराम भगिनि यह बानी, वेदहु लोकहु वाद्य बखानी ॥
रामचन्द्र मैं श्याला रोपन, मुखमस्तीतिन्याय कछु कोपन
जिमि कोउ पूँछै बोलत जोई, ताके मुखहै की नहिं होई ॥

जिमि इमि प्रश्न मृषातिमि सोई, श्यालारोप राम महँ होई ॥
अरु जासों धरणी अवतारा सत्यभामा यह शास्त्र प्रचारा ॥
तासों भूमि सुता की माता। अरु रघुनाथ सासु सुनु भ्राता
सासु केर पतिश्वसुर करारी। होत लेहु यह बात विचारी ॥
यासों कृष्ण रामजी केरे। लागत श्वसुर बात इमि हेरे ॥

❀ दोहा ❀

जब यह दल वृन्दावनहिं कृष्णशास्त्रि के पास।
पहुँचेउ लखि चुप ह्वै रहेउ पुनि न वाद की आश ॥

❀ चौपाई ❀

यद्यपि रामकृष्ण नहिं दूजे। एकै सब बिधि सब विधि पूजे
उनमैं श्याल श्वसुर व्यवहारा, कौनिउ भांति न कियेविचारा
पर परिहास भक्ति अनुसारा। उभय बुधन यह नात सँचारा
कौनिउ भांति जीभ सों भाई। रामकृष्ण गुण कहे भलाई ॥
यासों मैं भाषान्तर कीना। हौं तिनके सब विधि आधीना ॥
क्षमव सुजन जन मोरि ढिठाई। मति अनुरूप उभययश गाई

❀ दोहा ❀

एक समय काशी नृपति, महाराज के पास।
लिखि पत्री पूँछा कछू वर्णत सहित हुलास ॥

❀ चौपाई ❀

श्री काशीश एक दिन चीठी। महाराज ढिग भेजी मीठी ॥
तामैं लिख्यो कि रघुबर केरे। नाम धाम रुप लीला चेरे

कहां कहां यहि समय विराजत, लिखियेउतरमनहिंमनगाजत
यह लखि उतर लिख्योमहराजू। नीचे लिखतसहितसबसाजू

❀ श्री १०८ मन्त्रिपाठी जी का दोहा ❀

कोविद केवल धाम लहि, तीनि लही काशीश।
नाम रूप दोउ ईशलहि लीला लही महीश॥

❀ चौपाई ❀

अब मैं लिखत अर्थ यहि केरो, सुनहु सुजन पुनिनिजमनहेरो
कोविद श्रीयुत अवध निवासी, रघुवर धाम अवधलहिखासी
नाम रूप लीला रहि बाँकी, तीनिउँ लहि काशीश मुआंकी
पर काशीश दोय सब काहीं, विदित एक शिव यकनृपताहीं।
नाम रूप दुइ लहेउ उमेशा, लीला लही भूप शुचि देशा॥
होत रामलीला इषमासा। तहँ यासो यह अर्थ खुलासा॥

❀ दोहा ❀

महाराज कर दास यक, दौलत नाम प्रवीन।
ताहि काहु अपराध सों त्यागेहु सो लिखि दीन॥
दोहा जो नीचे लिखत बाचहु लोग सयान।
यह तिन भेजी डाक मैं गुनि कै कार्य अ यान॥

॥ दौलति का दोहा ॥

धाय धाय सब जगत मैं दौलति राखत पास।
सो कैसे विलगाइये चरण सरोरुह दास॥

यह लखि श्रीमहराज जी उत्तर लिख्यो विचित्र।
सो अब मैं नीचे लिखत लखिजन होहु सुचित्र॥

॥ श्री १०८ महराज का दोहा ॥

दौलत मैं दोलत बुरे मद अरु कोह अशेष।
धीर तीर राखत नहीं याते जानु बिशेष॥

❀ हरिगीतिका ❀

जय भद्रकालि प्रताप मुन्शी, सुभग लेखक जो सही।
तिन लहेउ नहि कइ रोज़ व्यय तब अर्ध दोहा लिखि कही
यो लिखत हैं महराजहू जिमि उत्तर लिखेउ विचित्र ही॥
लखि लेहु सज्जन सकल दैं चित करत बचन पवित्र ही॥

॥ जय भद्रकाली प्रताप का आधा दोहा ॥

सम्बल विन गुरुदेव जू व्याकुल भयो शरीर।

॥ इसका उत्तर श्री १०८ महाराज जी का आधा दोहा ॥

एकाशी काशी सरिस मन मैं धरिये धीर॥

❀ चौपाई ❀

अर्थ आधि दोहा कर येहू। कहत सुनहु सज्जन चित देहू॥
एकाशी सन काशि समाना, भाषा श्री महाराज महाना॥
काशी मैं ऋण मोचन कुण्डा, करत स्नान होत ऋण लुण्डा
ता सम बर्ष यकाशी केरो। ऋण खण्डिहि दै द्रव्य घनेरो
धरहु धीर मन में न संदेहू। ऋणी भयहु इमि तवै कहेहू

यह उत्तर लखि हर्षित मुन्शी, भये गई तिन की सब खुंशी
यक दिन एक विप्र तहँ आये। महाराज कहँ वचन सुनाये॥
महाराज हम सब साकेतू। घूमि घूमि देखा करि चेतू॥
पर फकीर काहुहि नहिं देखा, सकल मसहरिहिं करत पेखा
करत राज्य सुख सब निजगेहा, पीन नवीन प्रवीन सुदेहा
यह सुनि महाराज इमि पूँछा। तुम कछु पढ़े अहौ की छूँछा
तब द्विज कहा कि तुलसिकृतनीके, पढ़े अहैं हमसबविधिठीके
कह महराज पढ़हु तौ नीके। जामें सुर दुर्लभ पद ठीके॥
उत्तर काण्ड की है चौपाई। कहत पढ़े पर दिहेउ भुलाई॥

॥ वह आधी चौपाई यह है॥

सुर दुर्लभ सुखकरि जगमाहीं। अन्तकाल रघुपतिपुर जाहीं
यह सुनि विप्र चरण लपटाई। कह महराजहि माथ नवाई॥
मैं यह प्रश्न अखाड़न माहीं, युगलानन्यशरण मुख पाहीं॥
पूँछयो पर न उतर दिय काहू, आज लह्यों सबविधि मैं लाहू
करि प्रणाम द्विज गयहु स्वधामा, सुमिरत महाराजगुणग्रामा

❀ दोहा ❀

जिमि किय ग्रन्थ समाप्त तिन रामचरण बुध केरि।
सम्मति लै श्रीलालजी सुनहु कहत सो टेरि॥

❀ चौपाई ❀

श्रीपण्डित महराज महाना, रामचरण बुधराज बखाना॥
घाघर तट गणेशपुर वासी, बारह बंकी जिला विलासी॥

ता सम सुकवि न दूसर कोई। रामभक्ति पुनि तासम सोई ॥
अरु तासम उदार नहिं आना, पण्डित लखा न मृषाबखाना
मीमांसा व्याकरण न्यायसब, काव्य कोश अरु अलंकारफब
धर्मशास्त्र सब जानन हारे। महासुशील गंभीर सुधारे ॥
जिनके अद्भुत धर्मरु कर्मा। सकल बुधन सों अधिकअभर्मा
परम दया करि उन मुन्शी पर, महाराज दिग्विजयचरितवर
ताके ज्ञान योग्य भाषान्तर, करि लिखाय दीन्ह्यों सबबुधवर
लाल जीव इमि चाहत रहेऊ,कृष्ण शास्त्रिसोंजिमिलिपिभयऊ
अरु खण्डन मण्डन महराजू। जेहिविधिकीनसकलकरिसाजू
ऐसेहि पद पदार्थजिमिजिमिकहि,धर्मनिरूपणकीनशास्त्रगहि
सब कर लै सारांश लिखाइय। वह सुनि रामचरण बुधगाइय
की यह ग्रन्थ माहि संक्षेपा। महाराज की कथा निरूपा ॥
जन्म पठन पाठन दिग्विजयू सब विस्तार सहितनहिंभन्ययू
अरु जो एक जगह यकदिनकी, वार्तालिखत चहहुगेतिनकी
तौ न समाप्ति ग्रन्थ की कबहूं। कौनिउ भाँति होइहै सबहूँ ॥
जासों श्रीमहराज महाना। खर्रा ग्रन्थ अनेकन भाना ॥
धर्म कर्म निर्णय नानाविधि, वेद शास्त्र मत लैलै कियसिधि
अरु दिन दिन नव करतहि जाहीं,तिनभाषान्तरकैसलिखाहीं
जो जो भाव दयानिधि भाषे। भाषान्तरहि न आवत राखे ॥
अरु न लिखत बन सो सबभाऊ, जोनिजमुख महराज बताऊ
यासों अब थँभि ग्रन्थ समापों। सकल लिखनकीबातनजापों

हाँ मीमांसा न्याय व्याकरण इन आदिक के रचे ग्रन्थ गण
जो जो श्रीमहराज अनूपा। तिनके नाम लेहु लिखि चूपा।
श्रीमहराज कृत्य अवलोकन, अरु तिनरचितहु शास्त्रविलोकन
अरु तिन भणित ग्रन्थ के नाम।, देखि लेव सब सुखकीसामा
अरु जो पंडित सुकृति विचारी, तिन सबकहँसुखदेय करारी
यह सुनि लाल जीव रहि गयऊ, जाना सत्य कहत बुधहयऊ
सब ग्रन्थन के नाम करारी। लिखत लखहु बुध होहु सुखारी

❀ दोहा ❀

छवो शास्त्र विद्या सकल सब महँ श्रीमहाराज।
शोधन बोधन कीन सो वर्णत करि बहु साज॥

❀ चौपाई ❀

हैं षट् शास्त्र विदित संसारा। उनके आचार्यन सविचारा
जो जो आशय लिखे करारी, तिन पर श्रीमहराज तिवारी
जो जो ग्रन्थ रचे सब लिखऊँ, लखहु सुजनतुमकहँकाशिखऊँ
न्याय शास्त्र के कणव अचारज, नव पदार्थ वर्णत हैं आरज
यामैं न्याय तरङ्गिणि नामू। रचेउ ग्रन्थ महराज ललामू॥
जामैं तेरह सै अश्लोका। लखत होहिं बुध सकल विशोका
दूसर वैशेषिक बड़ शास्त्रू। तासु गौतमाचार्य सुपात्रू॥
वर्णन छ दश पदार्थन केरो। वर्णन होत सुजन मन हेरो॥
न्याय वैशिषिक दोनों माहीं। नव सोरह पदार्थ भाषा हीं
पर श्रीमहाराज दुनहुन के। मतरु मतान्तर भेद वहुन के॥

किय चौंसठ पदार्थ व्याख्याना. गुप्त नहीं सब प्रकट जहाना
तीसर सांख्य शास्त्र अतिआकर, कपिलदेव आचार्य सुनागर
यामैं चौविस तत्व बखाना । श्लोक सात सै सहित विधाना
कापिल सूत्र सार उद्धारा । ग्रन्थ रचेउ महराज सुसारा ॥
चौविस तत्व कपिल के भाषे, या महँ कह महराज सशाखे
चौथ शास्त्र पातञ्जलि भारी, तासु अचार्य शेस भ्रम हारी
योगाभ्यासाष्टाङ्ग समेता । यामैं शेस कहेउ मुनि हेता ॥
श्रीपाताञ्जलि सूत्र बृत्तिअस, नाम ग्रन्थ महराज रचेउ खस
जामैं चारि सहस अशलोका, देखत ही बुध होहि अशोका
पातञ्जलि सूत्रन के अर्थू । यामैं विस्तर सहित यथार्थू ॥
पंचम मीमांसा वर शास्त्रू । जैमिनि तासु अचार्य सुपात्रू ॥
यामैं कर्म प्रधान बखाना । करत सकल बुध तासु प्रमाना ॥
छठा शास्त्र वेदान्त सुठीका, तासु अचार्य व्यास मुनि ठीका
यामैं ब्रह्म बिचार भलीविधि, तासु बिचारत होतसकलसिधि
इन दोउ शास्त्रन केरि प्रकाशी,किय वेदान्त कला लतिकासी
कृति महराज सहस्र सात जहँ, हैं शलोक सुख देत बुधन कहँ
जैमिनि कर्म बखान्यो नीके । व्यास ब्रह्म वरण्योकरि ठीके
अरु महराज उभय महँ गावा, सकल कर्म कर राम बतावा
मन्त्र शास्त्र छा शास्त्रन बाहर, है आगम यहि कहँकहैंनागर
जासु अर्थ यह किहे विचारा, होत लखहिं बुधमतिअनुसारा
महादेव के मुख से आया । पार्वती के बदन समाया ॥

अरु शिव गिरिजाकर सम्वाद् । भये भयो यह शास्त्र सुनाद्
यामैं छा पदार्थ कर वर्णन । करत पवित्र परत ही कर्णन ॥
वशीकरण सम्मोहन मारन । उच्चाटन विद्वेषण कारण ॥
आकर्षण ये छवो पदारथ । तथा सकल गुण अहैं यथारथ
किय यहि विषय माहिं महराजू । महातत्व परकाश ससाजू
या महँ अष्टादश अशलोका, उनमैं सकल मन्त्र विन टोंका
अर्थ किये पर श्रीरघुनाथा । सब मन्त्रन कहँ करत सनाथा
जितने मन्त्र विदित संसारा । वै सब राम देव आधारा ॥
आन देव कर अर्थन कैसेहुं । शोचहु खोजहु जैसेहु तैसेहु ॥
पिङ्गल में छन्दन के नामा । अरु कविता की रीति ललामा
तासु अचार्य शेस जी अहहीं, जो सब भांति जगतहितकहहीं
पर यामिनी शास्त्र कविताई । केरि छन्द नहिं शेस बनाई ॥
श्रीमहराज पछत्तरि छन्दा, लिखेहु यामिनिहु के सअनन्दा
अरु संस्कृत के छन्द अनेका, तिन कर कहँ लगु करहुँविवेका
तासु नाम है बृत्त प्रकाशा । पन्द्रह सै शलोक तहँ बासा ॥
तामैं जो कविता की रीती । महाराज करिके अति प्रीती ॥
लिखीं कहहुसोकिमिलिखिजाहीं,तिननलिखनहितग्रन्थैनाहीं
वेद वदन व्याकरण बखाना,जो तेहिपढ़्यों न नहिंकछुजाना
तासु अचार्य तीनियकपाणिनि,कात्यायनरुपतञ्जलिचाणिनि
सूत्रकार पाणिनि कात्यायन, वार्तिककार पतञ्जलि गायन ।
भाष्यकार इमि तीनि तीनिके, मुनि कर्ता कहि दीन बीन के

पाणिनि सों कात्यायन केरो । अरु तिनहूँ सो पतञ्जलि टेरो
अधिक प्रमाण होत करिसामा, भुजगराज इनहीं कर नामा
तिन्हैं पतञ्जलि कहत बखानी, सब बुध मानत इनकी बानी
चौविस सहस शलोक पुनीता, रचेउ व्याकरण भाष्यविनीता
कैयट भट्ट विप्र कश्मीरी । टीका तासु रची अति शीरी ॥
कैयट विवरण है तेहि नामू । सब बिधि दूषण रहित कलामू
कैयट विवरण पर महराजू । टिप्पण अतिहि विलक्षण साजू
यामैं कहूँ शेस जी केरो । खण्डन मण्डन कीन घनेरो ॥
कहुँ कैयट कर खंडन मंडन, कीन भलीविधिगनिगनि गंडन
अरु नागेश भट्ट कृत शेखर, अष्टादश सहस्र सुविशेषर
यह सिद्धान्त कौमुदी केरो । टीका है दायक मति ढेरी ॥
ताहि विचार पूर्व करि खंडन, शब्देन्दिरा धरेति सुमंडन ॥
रच्यो ग्रन्थ यकतालिस साहस, यामें है शलोक युत वाहस
जासों कौमुदि सब व्याकरणू । भूषित भये पहिरि आभरणू
अरु शेखर असग्रन्थप्रमाणिक,लागततुच्छआमजिमिमाणिक
अरु यक शत बाइस परिभाषा, हैं व्याकरण शास्त्र मैं चाखा
वै अनेक मुनियों की भाषी । पाणिनि तिन्हैं जमाकरिराखी
उन पर टीका चौदह भारी, बनी खंडितिन काहिं तिवारी
व्याख्येन्दिरा धरेति सुटीका, रची सकलविधिसोंअतिठीका
यामैं पन्द्रह सै अशलोका, जिन पढ़ि बुधहि कहुँ कोउ रोका
जब श्रीमहाराज महि माहीं, विचरे नृपति सभा जहँ राहीं

अरु कहुँ कहुँ केवल बुधवृन्दा, जहाँ रहे तहँ कीन अनन्दा
भै दिग्विजय सकलविधिजहवां,अरुशास्त्रार्थभयोजिमितहँवां
जो जो प्रश्न बुधन करि दीना, समाधान जिमिकीन प्रवीना
ताकर ग्रन्थ सहस दुइ श्लोका । बन्यो पूर्व पक्षी कहँ लोका ।
यामैं पद पदार्थ व्याकरणी । निर्णय सहित भलीविधिवरणी
अरु श्रीमद्भागवत मझारी । वेद स्तुति जो कठिन करारी ॥
तामैं अट्ठाइस श्रुति भारी । ता ऊपर टीका बुध कारी ॥
अप्पय दीक्षित चित्सुखनामी, चक्रवर्ति अरु श्रीधर स्वामी
श्रीशंकराचार्य रामानुज । श्रीहनुमान जीव विजय ध्वज ॥
वोपदेव मधुसुदन सरस्वति, इन्हैं आदिटीकारचि शुभ गति
यक ते एक विलक्षण नीकी, तासु सफाइ न पर भै ठीकी ॥
महा बिलक्षण श्रीमहराजू । टीका तासु रची करि साजू ॥
वेद स्तुति टीका यहि नामू । सहस दोष अशलोक ललामू
द्वैत अद्वैत विशिष्टा द्वैतू । मत वेदान्त माहिं त्रय ह्वैतू ॥
उन सबके झगरे दिय मेटी । यह वेदान्त ग्रन्थ अति भेंटी

❀ दोहा ❀

श्रीरघुनाथ उपासना नेक भांति की ठीक ।
कोइ भजतैं कोइ भाव सों कोई कोइ से नीक ॥
काहु ग्रन्थ में है नहीं वर्णन साफ सुतार ।
यासों श्रीमहराज जू करिके बहुत बिचार ॥

परमहँस द्वयबाद सों नव्य ग्रन्थ रचि दीन।
तामैं सकल उपासना भलिविधि वर्णन कीन ॥

❀ चौपाई ❀

सरव्य सरोज भास्कर नामू। रचेउ ग्रन्थ सब भाँति ललामू
चारि सहस्र श्लोक यह माहीं, सखा भाव सर्वोत्तम काहीं ॥
श्रीजयदेव सुकवि यह नीको, रचेउ गीत गोविन्द सुठीको ॥
वामैं चौराशी अशलोका। अरु चौविस हरिपद गतिशोका
उनमैं कृष्ण चन्द्र शृँगारू। वर्णन कीन अनेक प्रकारू ॥
पर अवतार आन की गाथा। तनुक न वर्णी बुधगण नाथा
श्रीमहराज गीत गोविन्दू। रचेउ एक ह्वै अतिहि अनन्दू ॥
यामैं बारह सै अशलोकू। निरखत ही जो करत विशोकू ॥
चौवीसौ अवतारन केरी। यामैं गाथा रची घनेरी ॥
एक विष्णु पद प्रति अवतारा, अतिहिविलक्षणसहितविचारा
ऐसो अद्भुत ग्रन्थ न देखा, यदपि अनेकन कवि कृत पेखा
किमि वर्णौं जिन देखा ताहीं, वै जानत अपने मन माहीं ॥
नृपति भर्तृहरि तीनि शतकपर, रचे विचित्र अतीव वोधकर
राजनीति यक मैं तिन गाई। अरु यक मैं श्रृङ्गार बताई ॥
यक महँ शुभ वैराग्य बखाना। याही विधि महराज महाना
शतक त्रयी रची अति नीकी। जाके लखत लगत वह फीकी
ताकी उत्तमता किमि कहऊँ। देखत ही सुख होत न वकऊँ
अरु जो श्रीभागवत विखंडन, विद्यारण्य यती किय मंडन

जामैं लिखा कि यह व्यासोक्तू। ग्रन्थनरचेहुकोउवड़भोक्तू
तासु उपर श्रीयुत महराजू। खण्डन लिखेउ नाम सुनु आजू

❋ अनुष्टुप्छन्द ❋

श्रीमद्भागवत द्रोहदम्भ भूधर भेदक।
दम्भोलिकहिय नाम पाखण्डि मत छेदक॥

❀ चौपाई ❀

हैं यामैं शत त्रय अशलोका, जिन लखि विद्यारण्य सशोका
दीन अनेक प्रमाण करारी। महाराज बहु भाँति विचारी॥
कह यह अवशि व्यासकृतग्रन्था, जेहितुमसरहत सोहै कन्था
याके दीन प्रमाण घनेरे। सो लिखि चुके सुलखहिं बड़ेरे॥
श्रीमहराज सतोत्र अनेका। रचे सकल ते भरे विवेका॥
तित मैं रामचरण बुध जेते देखे हैं वै हैं सब एते॥
करुणा कल्पलता अस नामू। श्रीरघुनाथ स्तोत्र ललामू॥
यक सै तीनि पद्य यह माहीं, रचे बुधन कहं लखत पोसाहीं

॥ हरिगीतिका ॥

श्रीहनुमदष्टक कालिकाष्टक शङ्कराष्टक सिद्धिदम्।
लम्बोदराष्टक सरयुअष्टक सकलनव विधि ऋद्धिदम्॥
नव नव सबन महँ पद्य उत्तम देखि वित्तम मोहहीं।
जे कूर कायर कपट कलिकर कलुष करते चोमही॥

❀ चौपाई ❀

वेद स्तुति बत्तिस अशलोकू। राम स्तोत्र एक दश श्लोकू

पुनि रामस्तव दूसर एतो। श्रीजानकी स्तोत्र है तेतो ॥
रघुनन्दन षोडशक विचित्रू। सत्रह पद्य केर सुपवित्रू ॥
कुण्डलिका श्रीहनुमतजी का, छा सै सकल भांति सों ठीका

❀ दोहा ❀

दोहावलि रत्नावली यक सै बारह पद्य।
नित्य नियम श्रीराम कर यामैं वर्ण्यौ सद्य ॥

❀ चौपाई ❀

अरु विचित्र रामायण एकू। पद्य पञ्च शत सहित विवेकू ॥
बरवा छन्द रसिक रञ्जन अस, रामायण कर नाम करत वश
चारि सहस्र पद्यवर यामैं। सकल मनोरञ्जन कविता मैं ॥
सत सै पद्य राम सङ्गीता। राग विष्णु पद परम पुनीता ॥
छत्तिस कवित केर ऋतु वर्णन, सौ दोहा होलिका विसर्जन
अक्षर माला व्याख्या एकू। श्लोक वद्ध यह है अतिनेकू ॥
अक्षर माला भाष्य बहोरी। बरवा छन्द माहिं गति भोरी ॥
अक्षर माला भाष्य अनूपा। सुभग सवैया छन्द निरूपा ॥
दर्शन शतक पद्य सौ केरो। श्रीदिग्विजय शतक तिमि हेरो
राम सहस्र नाम यक पावन, द्विशत पद्यकर अतिहि सुहावन
उर्दू गद्य माहिं इतनोई। भाष्यो ग्रन्थ लाल जी जोई ॥
सो सब लै महराज सुनावा। अति प्रसन्न भे बहु मन भावा
कह कोउ संस्कृत यहि अरु भाषा, दोनों मैं वर्णत तौ चाखा
अब तक वर्णन कीन न कोई। नहिं संस्कृत नहिं भाषहिं सोई

यक दिन रामचरण बुध मोसों, कहा मीत यह होइहि तोसों
मम अरु निज गुरु चरित बखानी, करहु पवित्रसखेनिजबानी
यद्यपि मम मति नहिं तेहि योगू। जानत हैं सगरे बुध लोगू
पर मैं निजरसना शुचि हेतू। निज गुरु चरित कहा जसचेतू
जो गुरु पद सरोज की दाया, होइहि अरु रघुनाथ सहाया ॥
तो यह करब संस्कृतहु माहीं। गुरु पद कृपा करत का नाहीं
अष्टादश सै अधिक तिराशी, सँवत मैं श्रीअवध निवासी।
जबते भये धीश महराजू। तब से कतहुँ न गे करि साजू ॥
सैंतालीस वर्ष बसि नीके। दान मान दै सबहिं सुठीके ॥
कीन अनेकन चरित अनूपा, पर कछु कहेंउ स्वमति अनुरूपा
अब वर्णत जिमि श्रीमहराजा, जेहि हित आये करि सो काजा
परम धाम गे तजि स्वशरीरा। अवध माहिं नहिं कछुतनपीरा

॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

वर्षे विष्णु पदाग्नि नन्दशशिगे १९३० पक्षे वलक्षे-
रवौ पक्षत्यां सरयू समीप सदने भाद्रे दिवागाद्दिवम्।
श्रीरामेति वदँस्तनुन्तुलसिका नीरे सुते स्वान्धुरन्यस्य
श्री मदुमपती रघुपतेर्मित्रं सभासद्गुरुः ॥

❀ चौपाई ❀

रहे आठ दिन जब महराजहि, परम धाम चलिबे के साजहि
तब कछु ज्वर शरीर मैं व्यापा, पर त्रिकाल असनानरु जापा
सन्ध्या वन्दन तीनिहु काला, करत रहे सब नियम कृपाला

भादौं वदि चौदशि भृगुवारा, महाराज करि सकल विचारा
श्रीभारत वाल्मीकि भागवत, पुस्तक त्रय जिन कहँजगगावत
प्रति पुस्तक धरिके दीनारा, पाँच पाँच द्विज वरन हँकारा
जो अतिवेद शास्त्र महँ नागर, तिन्हैं सँकल्पि दीनकरिआदर
अरु शनिवार अमावस काहीं, कृष्णा पाँच धेनु मँगवाही ॥
सकल सवत्सा काञ्चन शृङ्गी, रूप्यखुरी क्षौमाम्बरि जुङ्गी ॥
निजकरकमल श्रोत्रियन काहीं, दीनशास्त्रविधि सों किमिगाहीं
भादौं शुदि प्रतिपद् रविवारा । खाग्निनन्द शशि वर्ष सुसारा
प्रात सनानरुसन्ध्यादिक सब, करि सुचित्त ह्वै बैठि जायतब
निज मशहरी उपर महराजू । बातैं होन लगी शुभ काजू ॥
इतने मैं दिन घटिका तीनी । चढ़्यो होत रहि बात प्रवीनी ॥
कह महराज सेवकन पाहीं । लागि पियासा है हम काहीं ।
करहु जाय असनान तयारी । यह सुनि सब निजकाज सँवारी
यह सर्वदा नियम रह भारी । जब मशहरी उपर पगु धारी ॥
विन सनान कीन्हें महराजू । कबहुं न पियहु बारि करि साजू
उठि सनान मन्दिर महँ गयऊ, स्नान भलीविधिसोतहँकियऊ
कछुक शिथिल ह्वै गयहु शरीरा, मुखसेनिकरबचनअतिधीरा
कह सरयूतट पर लै चलहू, कोइ न समुझा कोइ विकलहू ॥
तब महन्त जी अति घबड़ाये, अँगन तुलसिढिग दर्भविछाये
तिन पर तिलधरि श्री महराजहि उत्तर मुखलैबैठि विराजहि
श्रीमहराज लेयकर माला । लगे जपन श्रीराम कृपाला ॥

अरु सब राम राम ध्वनि कीनी, गुरु कहि राम जँभोई लीनी
परम धाम चलि बसेहु कृपालू । सकल लोग तबभयहुविहालू
चढ़्यो रहै दिन घटिका चारी । तब बैकुण्ठ मगहि पग धारी
कोलाहल सुनि अवध निवासी, आये धाय दर्श के आशी
बाबू बच्चूसिंह प्रवीना । ढाई मन घृत चन्दन दीना ।
अरु सुरदारु अगर बहु तगरू, यक बहु मोल दुशाला पगरू
यह सब दाह क्रिया सामग्री । पठई बाबू जीव गुणाग्री ॥
अरु रघुनाथदास महराजू । निज अधिकारिन कहँ यह काजू
सौंपेहु दाह क्रिया कर नीके, वै मन पाँचक घृत लै ठीके ॥
अच्युमतम एक दुशाला, विविधि भाँति सूती पटजाला
चन्दन अगर तगर लै दोऊ, अधिकारी आये सुनि सोऊ ॥
कालिदास नामी यक दूजे । जगन्नाथ दासेति सुपूजे ॥
तिन दिन अनावृष्टि रहिभारी, जस शरीरत्याग्योश्रितिवारी
महावृष्टि भै पहर प्रमाना । तब रघुनाथ दास जी भाना ॥
रोवत इन्द्र देखि महराजहि, व्याकरणेश तजी महि आजहि
मध्याह्नोत्तर रामघाट पर, भयो दाह सब ठाटि ठाट वर ॥
श्रीमहन्तजी करिकै दाहू । दीन तिलाञ्जलि अरु सब काहू
दीपदान घटदान बिधाना, करत रहे प्रतिदिन करि ध्याना
भादौं शुदि दशमी कुजवारा । भयहु दशाह वेद अनुसारा
एकादशी चन्द्रसुतवारा । महापात्र तहँवा पगु धारा ॥
भयहु श्राद्ध एकादशाह को । कहत दान कवि लहै थाह को

षोडशश्राद्धन मैं यक एका। शय्या दीन महन्त सटेका ॥
सब पर षट् ऋतु योग्य नवीने, वसन विचित्र धरे परबीने ।
सब पर यक यक श्रेष्ठ दुशाला, शय्यन पर राख्योतेहिकाला
महाछाग षोडश तहँ दीना । षोडश धेनु वत्स युत पीना ॥
नील बृषभवर बाछि समेता छोड़ा विधि पूर्वक युत हेता ॥
घड़ा परात कटोर कटोरी। आदि पचानव पात्र बटोरी ॥
दीन तहाँ बहु भाँति निहोरे, तुरग तीनि बहु मोल छकोरे ॥
यक रथ यक बग्घी यक पीनस,तामदानयकपालकिसजिखस
बड़े बड़े तम्बू दिय तीनो, सहित कनात बात भलि कीनी
अरु द्वय ऊँट साजि सब साजू। महापात्र भोजन अति भ्राजू
मन पचीश तीनी के चावल। अरु मन पांच मखाना लावल
श्रीरघुनाथ दास यह पठवा । महापात्र सब लहेहु यकठवा
जासों महाराज कर येहू । रहा नियम सब भांति सनेहू ॥
प्रातहि कृष्ण धेनु दधिमाहीं, लवा मखाना केरि भेवाहीं ॥
वह मध्याह्न सन्ध्य के पाछे, लागत रहेउ भोग तिन आछे ॥
निशि मैं एकपाव तिनिचावल, अरु तरकारी एकहि पावल
अरु एक पाव शुद्धनवनीता । सैन्धवलवण समेत पुनीता ॥
भोजन होत रहा नित येही । यासों पठयहु तासु सनेही ॥
यक शत पञ्चाशत महपात्रा, पायसादिसों किय मुख यात्रा
तेरह सै मुद्रा दक्षिनाहीं ॥ दीन महन्त जीव तिन काहीं,
ह्वै निहाल गे महाद्विजेन्द्रा, निज निज सदन मनहुँ मनुजेन्द्रा

भृगु वासर कहँ त्रयोदशाहू । भयेहु त्रयोदश विप्र बुलाहू ॥
महाकुलीन पात्र सरवरिहा । विद्वत्तम सिगरे वर वरिहा ॥
इन्है जेंवाय दीन पद दाना । जाकर है यहि भाँति विधाना
यक यक छत्र उपानह माला । पूजन सामग्री बहु जाला ॥
अंगुलीय यक यक सब वसना, पात्र सकल भूषण वनु जतना
यहि आदिक दै सवन विदावा । तिन महँ एक एकगज पावा
तदनन्तर सहसन नर भोजन । कीन करावा तासु न खोजन
वार्षिक आदि सकल यहि भाँती, कीनमहन्त न सो कहिजाती

❀ दोवै छन्द ❀

रामचन्द्र गुरु मित्र सभासद श्रीमदुमापति जी को ।
जो गाइहि दिग्विजय चरित यह सो पाइहि फल नीको ॥
अरु गुरु पद सरोज रति होइहि रघुवर चरण सरोजे ।
अमल भक्ति पाइहि सो जन यह कहत बात करि खोजे ॥
सुकुल वहोरण रामतनय वर धीर धीरमणि नामा ।
तासु इन्द्र मणि सुत तासुत विश्राम राम गुण धामा ॥
तासु तनुज श्री रजावन्द सुख कन्द द्विजन मैं ठीके ।
अवधराम शुभ नाम सकल गुण धाम तासु सुत नीके ॥
विप्र महेशदत्त सुत ताके बारह बङ्कि प्रदेशा ।
वहिरालय जन पद गोमति तट धनावली कृत वेशा ॥
तिन निज मति अनुरूप निरूपा निज गुरु चरित अनूपा ।
जो यहि पढ़िहि सुनिहि नित गाइहि सो न परिहि भवकूपा ॥

❀ दोहा ❀

या महँ यकतिस सर्गा अरु पौन आठ सै श्लोक।
मम कृत हैं गुरु प्रियन्ह को पढ़तै करहिं अशोक॥

इति श्री बारह बङ्की प्रदेशीय वहिरालय जनपदान्तर्गत गोमत्युत्तरतटस्थ धनावली निवासि मँझिगवाँ सुकुलोपनामक महेशदत्त शर्मा निर्मित श्रीमदुमापति दिग्विजय श्रोतृ स्मार्त पाठकर्त्रभ्यस्तदभीष्टप्रदो वोभूयात्॥

समाप्त

16702
श्री मतिराम राम ग्रन्थमाला

❀ दोहा ❀

या महँ यकतिस सर्गा अरु पौन आठ सै श्लोक।
मम कृत हैं गुरु प्रियन्ह को पढ़तै करहिं अशोक॥

इति श्री बारह बङ्की प्रदेशीय वहिरालय जनपदान्तर्गत गोमत्युत्तरतटस्थ धनावली निवासि मँझिगवाँ सुकुलोपनामक महेशदत्त शर्मा निर्मित श्रीमदुमापति दिग्विजय श्रोतृ स्मार्त पाठकर्तृभ्यस्तदभीष्टप्रदो वोभूयात्॥

समाप्त

16702
श्री गणिराम दास ओयनी

पुस्तक मिलने का स्थान —

श्री चन्द्रेश्वरपतिजी त्रिपाठी

नयाघाट, श्रीअयोध्याजी